वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 21
ISBN 978-93-80353-44-9

व्रत विधि एवं पूजा

–रचयित्री –

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

भगवान शांतिनाथ जन्म, दीक्षा व निर्वाणकल्याणक दिवस–ज्येष्ठ कृ. चतुर्दशी, 11 जून 2010 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित ''प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर वर्ष'' के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र. फोन नं.- (01233) 280184, 292943
Website : www.jambudweep.org
E-mail : ravindrajain@jambudweep.org

COURTESY–JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

सोलहवाँ संस्करण | वीर नि. सं. 2536,भाद्रपद शुक्ला 2 | मूल्य
2200 प्रतियाँ | 10 सितम्बर 2010 | 20/-रु.
श्री शांतिसागर जी महाराज की 55वीं पुण्यतिथि

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशन :–

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

–: सम्पादक :–

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

पूर्व में प्रकाशित : चौदह संस्करण कुल प्रकाशित–42900 प्रतियाँ
पन्द्रहवाँ संस्करण (सन् 2007)-3300 प्रतियाँ

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

आद्य वक्तव्य

–कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

दिगम्बर जैन साधु-साध्वियाँ आगम की आज्ञा के अनुसार तीर्थ दर्शनादि के निमित्त से सर्वत्र पद-विहार करते हैं। पद-विहार में मुख्यरूप से अहिंसा धर्म का पालन तो होता ही है, इसके अतिरिक्त और भी लाभ होते हैं। प्रत्येक छोटे-बड़े नगरों में जिनमंदिरों के सुगमता से दर्शन हो जाते हैं। स्वयं की धर्माराधना के साथ-साथ मार्ग में आने वाले नगरों की जनता को भी धर्मोपदेश श्रवण करने का तथा साधु सेवा का लाभ मिलता है।

अस्वस्थता आदि विविध कारणों के निमित्त से तीर्थों पर या नगरों में अधिकदिन रुकने का भी प्रसंग आ जाता है। इसके अतिरिक्त किसी भी एक ही नगर या स्थान पर ठहरकर चातुर्मास करने की जिनागम आज्ञा है। चातुर्मास काल में स्वयं साधु तो शांतिपूर्वक धर्मध्यान करते ही हैं, किन्तु श्रावकगण भी साधुओं से सहज लाभ प्राप्त कर लेते हैं।

अनेक पुरुष, महिलाएँ एवं बालिकाएँ त्यागमार्ग से प्रभावित होकर णमोकार, जिनगुणसंपत्ति, लब्धि विधान आदि व्रत ग्रहण करते हैं। पुरुष एवं बालक भी व्रत लेने में पीछे नहीं रहते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में व्रत लेने वालों की सुविधा के लिए पूज्य माताजी ने उन-उन व्रतों से संबंधित पूजाएँ एवं व्रतों की विधि भी लिखी है, जिससे व्रत धारण करने वाले निर्दोष रूप से व्रत कर सकेंगे।

इस पुस्तक में दी गई णमोकार पैंतीस व्रत विधि और सप्तपरमस्थान व्रत विधि 'व्रत तिथि निर्णय' पुस्तक के आधार से ली गई है। बृहत्पल्यव्रत विधि और सप्तपरमस्थान व्रत की कथा मराठी पुस्तक "व्रत कथा संग्रह" के आधार से ली है। वृहत्पल्य व्रत कामाहात्म्य 'वृहत्पल्य पूजा' नामक पुस्तक से लिया है। जिनगुणसंपत्ति व्रत कथा और जाप्य "प्राप्तार्घ्येयस्तवन-जिनगुणसंपत्ति व्रतकथा" नाम की पुस्तक के आधार से लिखी गई है।

पूज्य माताजी की रुचि चारों अनुयोगों में समान रूप है। सभी विषयों में माताजी का तलस्पर्शी प्रवेश है। जहाँ आपने न्याय-दर्शन के प्रधान ग्रंथ अष्टसहस्री का अनुवाद करके एक कीर्तिमान स्थापित किया है, वहीं आपने विभिन्न विषयों पर अनेक छोटी-बड़ी पुस्तकें लिखकर साहित्य जगत को अपूर्व देन दी है। यही कारण है कि पूज्य माताजी द्वारा लिखित "बाल विकास" के चारों भागों के प्रकाशन ने बाल जगत में धार्मिक ज्ञानार्जन के लिए क्रान्ति उत्पन्न कर दी है।

इस प्रकार पूज्य माताजी द्वारा रचित इन पूजाओं द्वारा विधि सहित व्रत करने वाले सहस्रों नर-नारी लाभान्वित होंगे, यही इस पुस्तक के प्रकाशन की सार्थकता का द्योतक होगा।

प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव जीवन दर्शन

–पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

आज से करोड़ों वर्ष पूर्व प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का जन्म भारतवर्ष के उत्तरप्रदेश की अयोध्यानगरी के महाराजा नाभिराय की महारानी मरुदेवी की पवित्र कुक्षि से चैत्र कृष्णा नवमी को हुआ। क्षत्रियवर्णी, काश्यपगोत्रीय, इक्ष्वाकुवंशी, तप्त स्वर्ण सदृश, बैल चिन्ह से युक्त उन तीर्थंकर भगवान के शरीर की अवगाहना दो हजार हाथ एवं आयु चौरासी लाख पूर्व वर्ष की थी। भगवान ऋषभदेव ने कर्मभूमि के आदि में प्रजा को असि, मसि आदि षट्क्रियाओं द्वारा जीवन जीने की कला सिखाई थी सम्पूर्ण विद्याओं और कलाओं के जनक भगवान ऋषभदेव ने चैत्र कृष्णा नवमी की शुभ तिथि में प्रयाग में वटवृक्ष के नीचे जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर घोर तपश्चरण किया पुनः मुनिपरम्परा को जीवन्त करने हेतु आहारार्थ निकले। 1 वर्ष 39 दिन के पश्चात् उनका प्रथम अहार हस्तिनापुर के राजा श्रेयांस के यहाँ इक्षुरस का हुआ। प्रयाग के पुरिमतालपुर उद्यान में वटवृक्ष के नीचे फाल्गुन कृष्णा ग्यारस को उन्हें दिव्यकेवलज्ञान की प्राप्ति हुई, उनके समवसरण में श्रीवृषभसेन आदि 84 गणधर, 84 हजार मुनि, गणिनी ब्राह्मी आर्यिका सहित 350000 आर्यिकाएं, 3 लाख श्रावक, 5 लाख श्राविकाएँ थे। उनके जिनशासन यक्ष गोमुख देव एवं यक्षी चक्रेश्वरी देवी हैं। आयु के अंत में उन्होंने माघ कृष्णाचौदस को कैलाशपर्वत से मोक्ष प्राप्त किया।

चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर का जीवन दर्शन

वर्तमान से 2605 वर्ष पूर्व चौबीसवें एवं अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म भारतवर्ष के बिहार प्रांत में कुण्डलपुर (जि.-नालंदा) नगरी में महाराजा सिद्धार्थ की महारानी त्रिशला की पवित्र कुक्षि से चैत्र शुक्ला त्रयोदशी की पवित्र तिथि में हुआ। क्षत्रियवर्णी, काश्यपगोत्रीय, नाथवंशी, तप्त स्वर्ण सदृश, सिंह चिन्ह से युक्त उन तीर्थंकर भगवान के शरीर की अवगाहना सात हाथ एवं आयु 72 वर्ष की थी। 30 वर्ष की उम्र में अखण्ड ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करने वाले भगवान महावीर ने षण्डवन में सालवृक्ष के नीचे मगशिर कृष्णा दशमी तिथि में दीक्षा ग्रहण की। उनका प्रथम आहार कूल ग्राम के राजा वकुल (अपर नाम कूल) के द्वारा खीर का हुआ तथा विशेष आहार कौशाम्बी में महासती चंदना द्वारा खीर का हुआ। भगवान महावीर को दिव्य केवलज्ञान की प्राप्ति ज्ञातृषण्डवन में वैशाख शुक्ल दशमी को ऋजुकूला नदी के तट पर हुई, उनके समवसरण में श्री इन्द्रभूति आदि 11 गणधर, 14 हजार मुनि, गणिनी आर्यिका चन्दना सहित छत्तीस हजार आर्यिकाएँ, 1 लाख श्रावक व 3 लाख श्राविकाएं थीं। उनकी दिव्यध्वनि श्रावण कृष्णा एकम को खिरी और कार्तिक कृष्णा अमावस्या को आज से 2532 वर्ष पूर्व बिहार प्रान्त स्थित पावापुरी से मोक्ष पद प्राप्त किया।

भगवान महावीर के वीर, वर्द्धमान, महावीर, सन्मति, अतिवीर ये पाँच नाम प्रसिद्ध हैं।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991(सन् 1934)

गृहस्थ का नाम–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में।

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तीर्थ का निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा–भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ(निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसीमंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा निर्माण की प्रेरणा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं–

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।
2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।
3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।
4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है–कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, तीन लोक रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिरएवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।
5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।
6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।
7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।
8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।
9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।
10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।
11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।
12. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खी बावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
17. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कनॅट प्लेस, नई दिल्ली।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली
19. श्री जितेन्द्र कुमार सुनीता कोटड़िया, फ्लोरिडा (यू.एस.ए.)

विषय सूची

क्र.स.	विषय	पृष्ठ
1.	णमोकार महामंत्र पूजा	1
2.	जिनगुणसंपत्ति व्रत पूजा	6
3.	वासुपूज्य जिनपूजा	10
4.	श्री पंचपरमेष्ठी पूजा	15
5.	सप्तपरमस्थान पूजा	20
6.	णमोकार पैंतीसी व्रत विधि	25
7.	जिनगुणसंपत्ति व्रत विधि	25
8.	जिनगुणसंपत्ति के मंत्र	28
9.	रोहिणी व्रत विधि एवं पूजा	33
10.	वृहत्पल्य व्रत की तिथियाँ	40
11.	वृहत्पल्य व्रत विधि का माहात्म्य	41
12.	सप्तपरमस्थानव्रत की विधि	42
13.	सम्मेदशिखर टोंक वंदना	45
14.	पंचपरमेष्ठी आरती	48

णमोकार महामंत्र पूजा

–स्थापना-गीता छंद –

अनुपम अनादि अनंत है, यह मंत्रराज महान है।
सब मंगलों में प्रथम मंगल, करत अघ की हान है।।
अर्हंत सिद्धाचार्य पाठक, साधुओं की वंदना।
इन शब्दमय परब्रह्म को, थापूँ करूँ नित अर्चना।।1।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधन-पंचनमस्कारमंत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अनादिनिधन-पंचनमस्कारमंत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अनादिनिधन-पंचनमस्कारमंत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक-भुजंगप्रयाग छंद –

महातीर्थ गंगानदी नीर लाऊँ।
महामंत्र की नित्य पूजा रचाऊँ।।
णमोकार मंत्राक्षरों को जजूँ मैं।
महाघोर संसार दुःख से बचूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधन-पंचनमस्कारमंत्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कपूरादिचंदन महागंध लाके।
परं शब्द ब्रह्मा की पूजा रचाके।।
णमोकार मंत्राक्षरों को जजूँ मैं।
महाघोर संसार दुःख से बचूँ मैं।।2।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधन-पंचनमस्कारमंत्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पयोसिंधु के फेन सम अक्षतों को।
लिया थाल में पुँज से पूजने को।।
णमोकार मंत्राक्षरों को जजूँ मैं।
महाघोर संसार दुःख से बचूँ मैं।।3।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधन-पंचनमस्कारमंत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही कुंद अरविंद मंदार माला।
चढ़ाऊँ तुम्हें काम को मार डाला।।
णमोकार मंत्राक्षरों को जजूँ मैं।
महाघोर संसार दुःख से बचूँ मैं।।4।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधन-पंचनमस्कारमंत्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कलाकंद लड्डू इमरती बनाऊँ।
तुम्हें पूजते भूख व्याधी नशाऊँ।।
णमोकार मंत्राक्षरों को जजूँ मैं।
महाघोर संसार दुःख से बचूँ मैं।।5।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधन-पंचनमस्कारमंत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखा दीप की ज्योति विस्तारती है।
महामोह अंधेर संहारती है।।
णमोकार मंत्राक्षरों को जजूँ मैं।
महाघोर संसार दुःख से बचूँ मैं।।6।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधन-पंचनमस्कारमंत्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंधी बढ़े धूप खेते अगनि में।
सभी कर्म की भस्म हो एक क्षण में।।
णमोकार मंत्राक्षरों को जजूँ मैं।
महाघोर संसार दुःख से बचूँ मैं।।7।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधन-पंचनमस्कारमंत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंनास अंगूर अमरूद लाया।
महामोक्षसंपत्ति हेतू चढ़ाया।।
णमोकार मंत्राक्षरों को जजूँ मैं।
महाघोर संसार दुःख से बचूँ मैं।।8।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधन-पंचनमस्कारमंत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक गंध आदि मिला अर्घ्य लाया।
महामंत्र नवकार को मैं चढ़ाया।।
णमोकार मंत्राक्षरों को जजूँ मैं।
महाघोर संसार दुःख से बचूँ मैं।।9।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधन-पंचनमस्कारमंत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

शांतीधारा मैं करूँ, तिहुँ जग शांती हेत।
भव-भव आतप शांत हो, पूजूँ भक्ति समेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल मल्लिका पुष्प ले, पूजूँ मंत्र महान।
पुष्पांजलि से पूजते, सकलसौख्य वरदान।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य– **ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं। ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं।**
ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं। ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं।
ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं।

(108 सुगंधित श्वेत पुष्पों से या लवंग अथवा पीले तंदुलों से जाप्य करना)

जयमाला

–सोरठा–

पंचपरमगुरुदेव, नमूँ नमूँ नत शीश मैं।
करो अमंगलछेव, गाऊँ तुम गुणमालिका।।1।।

चाल –हे दीनबंधु.....

जैवंत महामंत्र मूर्तिमंत धरा में।
जैवंत परमब्रह्म शब्दब्रह्म धरा में।।

जैवंत सर्वमंगलों में मंगलीक हो।
जैवंत सर्वलोक में तुम सर्वश्रेष्ठ हो।।1।।

त्रैलोक्य में हो एक तुम्हीं शरण हमारे।
माँ शारदा भी नित्य ही तुम कीर्ति उचारे।।
विघ्नों का नाश होता है तुम नाम जाप से।
सम्पूर्ण उपद्रव नशे हैं तुम प्रताप से।।2।।

छ्यालीस सुगुण को धरें अरिहंत जिनेशा।
सब दोष अट्ठारह से रहित त्रिजग महेशा।।
ये घातिया को घात के परमात्मा हुए।
सर्वज्ञ वीतराग औ निर्दोष गुरु हुए।।3।।

जो अष्ट कर्म नाश के ही सिद्ध हुए हैं।
वे अष्ट गुणों से सदा विशिष्ट हुए हैं।।
लोकाग्र में हैं राजते वे सिद्ध अनन्ता।
सर्वार्थसिद्धि देते हैं वे सिद्ध महन्ता।।4।।

छत्तीस गुण को धारते आचार्य हमारे।
चउसंघ के नायक हमें भवसिंधु से तारें।।
पच्चीस गुणों युक्त उपाध्याय कहाते।
भव्यों को मोक्षमार्ग का उपदेश पढ़ाते।।5।।

जो साधु अट्ठाईस मूलगुण को धारते।
वे आत्म साधना से साधु नाम धारते।।
ये पंचपरमदेव भूतकाल में हुए।
होते हैं वर्तमान में भी पंचगुरु ये।।6।।

होंगे भविष्य काल में भी सुगुरु अनन्ते।
ये तीन लोक तीन काल के हैं अनन्ते।।
इन सब अनन्तानन्त की मैं वंदना करूँ।
शिवपथ के विघ्न पर्वतों की खण्डना करूँ।।7।।

इक ओर तराजू पे अखिल गुण को चढ़ाऊँ।
इक ओर महामंत्र अक्षरों को धराऊँ।।

इस मंत्र के पलड़े को उठा ना सके कोई।
महिमा अनन्त यह धरे ना इस सदृश कोई।।8।।

इस मंत्र के प्रभाव श्वान देव हो गया।
इस मंत्र से अनन्त का उद्धार हो गया।।
इस मंत्र की महिमा को कोई गा नहीं सके।
इसमें अनन्त शक्ति पार पा नहीं सके।।9।।

पाँचों पदों से युक्त मंत्र सारभूत है।
पैंतीस अक्षरों से मंत्र परमभूत है।।
पैंतीस अक्षरों के जो पैंतीस व्रत करें।
उपवास या एकाशना से सौख्य को भरें।।10।।

तिथि सप्तमी के सात पंचमी के पाँच हैं।
चौदश के चौदह नवमी के भी नव विख्यात हैं।।
इस विध से महामंत्र की आराधना करें।
वे मुक्ति वल्लभा पती निज कामना वरें।।11।।

–दोहा–

यह विष को अमृत करे, भव-भव पाप विदूर।
पूर्ण ''ज्ञानमति'' हेतु मैं, जजूँ भरो सुख पूर।।12।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधन-पंचनमस्कारमंत्राय जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

मंत्रराज सुखकार, आतम अनुभव देत है।
जो पूजें रुचिधार, स्वर्ग मोक्ष के सुख लहें।।13।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

।।इत्याशीर्वादः।।

ॐ ह्रीं विश्वशांतिकराय
श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः।

जिनगुण संपत्ति पूजा

–स्थापना-गीता छंद–

जैनेन्द्र गुण की संपदा के, नाम त्रेसठ मुख्य हैं।
सोलह सुकारण भावना, वर प्रातिहार्य जु अष्ट हैं।।
चौंतीस अतिशय पंचकल्याणक सुत्रेसठ जानिये।
श्री जिनगुणों की थापना कर, पूजते सुख मानिए।।1।।

ॐ ह्रीं जिनगुणसंपत्तिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं जिनगुणसंपत्तिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं जिनगुणसंपत्तिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(चाल-पूजो पूजो श्री अरिहंत देवा)

नीर गंगानदी का लाऊँ, हेम झारी से धारा कराऊँ।
मैल आतम का शीघ्र हटाऊँ, जिनेन्द्र गुण संपद जजूँ मनलाके।।
तीर्थंकर गुणों की सम्पत, पूजते क्षीण होती विपद सब।
शीघ्र मिलती निजातम संपत, जिनेन्द्र गुण संपद जजूँ मन लाके।।1।।

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत चंदन सुकेशर लाऊँ, नाथ के गुण की पूजा रचाऊँ।
ताप संसार का सब मिटाऊँ, जिनेन्द्र गुण संपद जजूँ मन लाके।।
तीर्थंकर गुणों की सम्पत, पूजते क्षीण होती विपद सब।
शीघ्र मिलती निजातम संपत, जिनेन्द्र गुण संपद जजूँ मन लाके।।2।।

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द रश्मि सदृश अक्षत हैं, पुंज धरते नशत सब अघ हैं।
मिले आतम की सब संपद है, जिनेंद्र गुण संपद जजूँ मन लाके।।
तीर्थंकर गुणों की सम्पत, पूजते क्षीण होती विपद सब।
शीघ्र मिलती निजातम संपत, जिनेन्द्र गुण संपद जजूँ मन लाके।।3।।

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद मंदार चंपक मल्ली, पूजते ही कटे भव वल्ली।
फैले जग में भविक यश वल्ली, जिनेंद्र गुण संपद जजूँ मन लाके।।

तीर्थंकर गुणों की सम्पत, पूजते क्षीण होती विपद सब।
शीघ्र मिलती निजातम संपत, जिनेन्द्र गुण संपद जजूँ मन लाके।।4।।

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फेनी घेवर कलाकंद लाके, व्याधि विरहित प्रभू गुण गाके।
भूख बाधा को पूर्ण मिटाके, जिनेंद्र गुण संपद जजूँ मन लाके।।
तीर्थंकर गुणों की सम्पत, पूजते क्षीण होती विपद सब।
शीघ्र मिलती निजातम संपत, जिनेन्द्र गुण संपद जजूँ मन लाके।।5।।

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप में शुद्ध गौघृत जलाऊँ, ज्योति से पूजते भ्रम भगाऊँ।
चित्त में ज्ञान ज्योति जगाऊँ, जिनेंद्र गुण संपद जजूँ मन लाके।।
तीर्थंकर गुणों की सम्पत, पूजते क्षीण होती विपद सब।
शीघ्र मिलती निजातम संपत, जिनेन्द्र गुण संपद जजूँ मन लाके।।6।।

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप कृष्णागरू चंदन है, खेवते पापराशी दहन है।
आत्म पीयूष वर्षा सघन है, जिनेंद्र गुण संपद जजूँ मन लाके।।
तीर्थंकर गुणों की सम्पत, पूजते क्षीण होती विपद सब।
शीघ्र मिलती निजातम संपत, जिनेन्द्र गुण संपद जजूँ मन लाके।।7।।

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम अंगूर अमरूद फल हैं, पूजते विघ्नराशी विफल है।
शीघ्र मिलता निजातम फल है, जिनेंद्र गुण संपद जजूँ मन लाके।।
तीर्थंकर गुणों की सम्पत, पूजते क्षीण होती विपद सब।
शीघ्र मिलती निजातम संपत, जिनेन्द्र गुण संपद जजूँ मन लाके।।8।।

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि अर्घ्य बनाऊँ, आपकी नित्य पूजा रचाऊँ।
अनमोल रतन तीन पाऊँ, जिनेंद्र गुण संपद जजूँ मन लाके।।
तीर्थंकर गुणों की सम्पत, पूजते क्षीण होती विपद सब।
शीघ्र मिलती निजातम संपत, जिनेन्द्र गुण संपद जजूँ मन लाके।।9।।

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

शांतिधारा करत ही, त्रिभुवन में हो शांति।
जिनगुण संपद अर्चना, करे निजातम शांति।।10।।

शांतये शांतिधारा।

–दोहा–

कमल केतकी मालती, पुष्प सुगंधित लाय।
पुष्पांजलि कर पूजते, सुख संपति अधिकाय।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–**ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यः नमः।**

(108 सुगंधित पुष्प अथवा लवंग से जाप्य करें)

जयमाला

–सोरठा–

मिले मुक्ति साम्राज्य, जिनगुण संपति पूजते।
तुम गुणमणि की माल, धारूँ कंठ विषै सदा।।1।।

(चाल-श्रीपति जिनवर करुणायतनं)

जय जय जिनगुण संपत जग में, मुक्ती पद कारण मानी है।
जय जय तीर्थंकर प्रकृतिबंध की, सोलह भावन भानी है।।
जय जय दर्शन सुविशुद्धि आदि, गुण निधि को जो जन पाते हैं।
सोलह कारण भावन भाके, तीर्थंकर पद पा जाते हैं।।1।।

गर्भावतार जिनगुण संपत, जन्माभिषेक कल्याण महा।
दीक्षा-केवल-निर्वाणरूप, कल्याणक होते पाँच अहा।।
जो भविजन इनको पा लेते, वे धर्मचक्र नेता होते।
भवपंच परावर्तन तजकर, तीर्थंकर जगवेत्ता होते।।2।।

वे आठ प्रातिहार्यों से नित, भूषित अगणित महिमा धारी।
तरुवर अशोक सुर पुष्पवृष्टि, दिव्यध्वनि चामर सुखकारी।।
सिंहासन भामंडल शोभे, त्रय छत्र त्रिजग वैभव गाते।
प्रभु समवसरण लक्ष्मी भर्ता, त्रिभुवन के गुरु माने जाते।।3।।

वे जन्म समय के दश अतिशय, पाकर के अतिशय शाली हैं।
कैवल्यरमापति होते ही, दश अतिशय गुणमणिमाली हैं।।

देवों के द्वारा किये गये, चौदह अतिशय भी गाए हैं।
चौंतीसों अतिशय सहित हुए, अर्हंत प्रभू कहलाये हैं।।4।।

इस विध त्रेसठ जिनगुण संपत, व्रत का भवि पालन करते हैं।
सोलह प्रतिपद के सोलह अरु, पंचमि के पाँच उचरते हैं।।
अष्टमि तिथि के व्रत आठ गिने, दशमी के बीस कहाये हैं।
चौदश के चौदह व्रत करके, त्रेसठ जिनगुण व्रत पाये हैं।।5।।

इस विधि से जो नर-नारीगण, उपवास सहित व्रत करते हैं।
अथवा एकाशन से करके, जिनगुण संपत भी वरते हैं।।
धनधान्य समृद्धी सुख पाते, चक्री की पदवी पाते हैं।
देवेन्द्र सुखों को भोग-भोग, तीर्थंकर भी हो जाते हैं।।6।।

मैं भी श्रद्धा से जिनगुण में, नितप्रति ही भाव लगाता हूँ।
प्रत्येक भावना पुनः पुनः, अनुरागी होके भाता हूँ।।
निज आत्म गुणों की संपत्ती, पाने हेतू ही आया हूँ।
रागादिक दोष मिटा दीजे, यह आश हृदय में लाया हूँ।।7।।

हे देव! कृपा ऐसी करिये, मेरे दुःखों का क्षय होवे।
कर्मों का क्षय हो बोधि लाभ, होवे अरु सुगति गमन होवे।।
होवे समाधि से मरण नाथ! मुझ को जिनगुण संपति होवे।
''कैवल्य ज्ञानमति'' हो करके, निज मुक्तिरमा में रति होवे।।8।।

–दोहा–

गुण अनंत सागर प्रभो! कोई न पावें पार।
किंचित् गुणमणि गूंथ के, धरूँ कंठ में हार।।9।।

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य परिपुष्पांजलिः।

–दोहा–

गणपति गुण गणना करें, निज आतम गुण हेतु।
जो नर-नारी भी गिनें, शीघ्र लहें भव सेतु।।10।।

।। इत्याशीर्वादः।।

वासुपूज्य जिनपूजा

–गीताछंद –

वासवगणों से पूज्य भगवन्! वासुपूज्य महान हो।
तीर्थंकरों में बारहवें, वर तीर्थकर्ता मान्य हो।।
वर भक्ति श्रद्धाभाव से, प्रभु आप आह्वानन करें।
पूजा रचाकर आपकी, निज आत्म आराधन करें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक-(नाराच छंद) –

सिंधु नीर स्वच्छ शुद्ध स्वर्ण कुंभ में भरूँ।
आप पाद पूजते हि कर्मकालिमा हरूँ।।
रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि कीजिए।
वासुपूज्य देव पूज शोक दूर कीजिए।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टगंध गंधपूर्ण नाथपाद पूजिए।
राग आग दाह नाश पूर्ण शांत हूजिए।।
रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि कीजिए।
वासुपूज्य देव पूज शोक दूर कीजिए।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र चन्द्रिका समान श्वेत शालि लाइये।
नाथ पाद पूजते अखंड सौख्य पाइये।।
रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि कीजिए।
वासुपूज्य देव पूज शोक दूर कीजिए।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पारिजात मालती गुलाब पुष्प लाइये।
काम मल्ल जीतने जिनेश को चढ़ाइये।।
रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि कीजिए।
वासुपूज्य देव पूज शोक दूर कीजिए।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मुद्ग लड्डुकादि पायसादि थाल में भरे।
भूख व्याधि नाशने जिनेन्द्र अर्चना करें।।
रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि कीजिए।
वासुपूज्य देव पूज शोक दूर कीजिए।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नदीप में कपूर ज्वालते शिखा बढ़े।
आप पूजते सुज्ञान ज्योति चित्त में बढ़े।।
रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि कीजिए।
वासुपूज्य देव पूज शोक दूर कीजिए।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

रक्त चंदनादि मिश्र धूप अग्नि में जलें।
आप पास में समस्त कर्म भस्म हो चलें।।
रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि कीजिए।
वासुपूज्य देव पूज शोक दूर कीजिए।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम दाडिमादि खारिकादि थाल में भरे।
आप चर्ण पूजते अनन्त सिद्धि को वरें।।
रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि कीजिए।
वासुपूज्य देव पूज शोक दूर कीजिए।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

तोय गंध शालि पुष्प अन्न दीप धूप हैं।
सत्फलों से युक्त अर्घ्य से जजूँ अनूप है।।
रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि कीजिए।
वासुपूज्य देव पूज शोक दूर कीजिए।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

शांतिधारा मैं करूँ, जिनपदपंकज मांहि।
शांति करो सब लोक में, कर्मकीच धुल जांहि।।10।।

शांतये शांतिधारा।

कमल वकुल मल्ली कुसुम, सुरतरु के उनहार।
पुष्पांजलि करते प्रभू, मिले सकल सुखसार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–स्रग्विणी छंद–

मात विजयावती गर्भ में आवते,
मास आषाढ़ षष्ठी वदी थी जबे।
इन्द्र आ गर्भकल्याण पूजा करें,
अर्चते पाप सब एक क्षण में टरें।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाषष्ठ्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुनी कृष्ण चौदश जनम आपका,
इन्द्र कीना न्हवन मेरु पे आपका।
जन्म कल्याण उत्सव शचीपति करें,
नित्य पूजें तुम्हें विघ्न बाधा टरें।।2।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्ण फाल्गुन सुचौदस दिगम्बर हुए,
बाह्य अंतर परिग्रह सभी तज दिये।
देव दीक्षा सुकल्याण पूजा करें,
आज हम पूजते सर्व पीड़ा हरें।।3।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ला द्वितीया तिथी जो भली,
घात के घातिया तुम हुए केवली।
इन्द्र ने ज्ञान कल्याण पूजा करी,
पूजते ज्ञान ज्योती मेरे अंतरी।।4।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भाद्रपद शुक्ल चौदस प्रभू शिव गये,
देव निर्वाण कल्याण पूजत भये।
भक्ति से मोक्ष कल्याण पूजा करें,
पंचकल्याण लक्ष्मी तुरंते वरें।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य - **ॐ ह्रीं अर्हं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।**
(108 लवंग या पुष्पों से)

जयमाला

–दोहा–

वासुपूज्य वसुपूज्यसुत, वासवगण से वंद्य।
तुम गुणमणिमाला धरूँ, कंठ मांहि सुखकंद।।1।।

चाल-हे दीनबंधु.....

जय वासुपूज्य देव तीन लोक वंद्य हो।
जय जय अनंत सुगुण रत्न के करंड हो।।
हे नाथ! भक्ति भाव से मैं वंदना करूँ।
अनंत सौख्य सिंधु नाथ अर्चना करूँ।।1।।

चंपापुरी को धन्य आप जन्म से किया।
माता जयावती की कुक्षि से जनम लिया।।
आयू है बाहत्तर सुलक्ष वर्ष की कही।
तन की ऊँचाई दो सौ असी हाथ प्रम कही।।2।।

तनकांति पद्मरागमणी के समान है।
है चिन्ह महिष का कहा जाने जहान है।।
कल्याणकों पाँचों की भू पवित्र कही है।
चंपापुरी निर्वाणभूमि सौख्य मही है।।3।।

जो वासुपूज्य देव की आराधना करें।
सम्यक्त्वशुद्ध तीन रत्न साधना करें।।

जो रोहिणी नक्षत्र दिवस व्रत विधी करें।
तुम नाम मंत्र जाप से भव जल निधी तरें।।4।।

वह हस्तिनापुरी नरेश जो कि अशोक था।
उसकी प्रिया थी रोहिणी जिसको न शोक था।।
इक बार वक्ष कूटती रोती थी भामिनी।
तव रोहिणी ने प्रश्न किया धाय सामनी।।5।।

हे मात! कहो कौन-सी ये नृत्य कला है।
तब धाय कहे तू हुई उन्मत्त भला है।।
यह देख के आश्चर्य नृपति पुत्र उठाया।
ऊँचे महल की छत से उसे भू पे गिराया।।6।।

तत्क्षण सुरों ने पुत्र को आसन पे बिठाया।
ढोरे चंवर यह आश्चर्य सबको दिखाया।।
राजा मुनी से एक बात पूछता सही।
क्यों नाथ! रोहिणी को रुदन ज्ञान भी नहीं।।7।।

मुनि ने कहा यह रोहिणी व्रत का माहात्म्य है।
रोना किसे कहते हैं जो इसको न ज्ञान है।।
यह फल तो है मनाक्[1] क्रम से मोक्ष मिले है।
संसार के सुख भोग बोध कमल खिले हैं।।8।।

–घत्ता–

जय जय तीर्थंकर, भव संकट हर, विघ्न अद्रि को चूर्ण करें।
जो तुम पद ध्यावें, शिवसुख पावें, ''ज्ञानमती' को पूर्ण करें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

धर्मचक्र को धारते, तीर्थंकर जिनदेव।
''ज्ञानमती' लक्ष्मी सहित, तुरत सिद्ध पद देव।।10।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

---

1. किंचित्

श्री पंचपरमेष्ठी पूजा

–अडिल्ल छन्द –

अर्हत्सिद्धाचार्य, उपाध्याय साधु हैं।
कहे पंचपरमेष्ठी, गुणमणि साधु हैं।।
भक्ति भाव से करूँ, यहाँ पर थापना।
पूजूँ श्रद्धा धार, करूँ हित आपना।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं (चाल-नन्दीश्वर श्री जिनधाम.....)

सुर सरिता का जल स्वच्छ, कंचन भृंग भरूँ।
भव तृषा बुझावन हेतु, तुम पद धार करूँ।।
श्री पंचपरमगुरुदेव, पंचमगति दाता।
भव भ्रमण पंच हर लेव, पूजूँ पद त्राता।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयज चंदन कर्पूर, गंध सुगंध करूँ।
भव दाह करो सब दूर, चरणन चर्च करूँ।।
श्री पंचपरमगुरुदेव, पंचमगति दाता।
भव भ्रमण पंच हर लेव, पूजूँ पद त्राता।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पयसागर फेन समान, अक्षत धोय लिया।
अक्षय गुण पाने हेतु, पुंज चढ़ाय दिया।।
श्री पंचपरमगुरुदेव, पंचमगति दाता।
भव भ्रमण पंच हर लेव, पूजूँ पद त्राता।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मचकुंद कमल वकुलादि, सुरभित पुष्प लिया।
मदनारिजयी पदकंज, पूजत सौख्य लिया।।
श्री पंचपरमगुरुदेव, पंचमगति दाता।
भव भ्रमण पंच हर लेव, पूजूँ पद त्राता।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर फेनी रस पूर्ण, मोदक शुद्ध लिया।
मम क्षुधा रोग कर चूर्ण, तुम पद पूज किया।।
श्री पंचपरमगुरुदेव, पंचमगति दाता।
भव भ्रमण पंच हर लेव, पूजूँ पद त्राता।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो क्षुधारोगनिवारणाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति प्रकाश, दशदिश ध्वांत हरे।
तुम पूजत मन का मोह, हर विज्ञान भरे।।
श्री पंचपरमगुरुदेव, पंचमगति दाता।
भव भ्रमण पंच हर लेव, पूजूँ पद त्राता।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुगंधित धूप, खेवत कर्म जरें।
सब कर्म कलंक विदूर, आतम शुद्ध करें।।
श्री पंचपरमगुरुदेव, पंचमगति दाता।
भव भ्रमण पंच हर लेव, पूजूँ पद त्राता।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अनार खजूर, फल के थाल भरे।
तुम पद अर्चत भव दूर, शिवफल प्राप्त करे।।
श्री पंचपरमगुरुदेव, पंचमगति दाता।
भव भ्रमण पंच हर लेव, पूजूँ पद त्राता।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प, नेवज दीप लिया।
वर धूप फलों से पूर्ण, तुम पद अर्घ्य किया।।
श्री पंचपरमगुरुदेव, पंचमगति दाता।
भव भ्रमण पंच हर लेव, पूजूँ पद त्राता।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

पंचपरमगुरु के चरण, जल की धारा देत।
निज मन शीतल हेतु अर, तिहुं जग शांती हेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल मल्लिका सित कमल, पुष्प सुगंधित लाय।
पुष्पांजलि कर जिन चरण, पूजूँ मन हरषाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-**ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यो नमः।**
(108 सुगंधित पुष्प या लवंग से जाप्य करना।)

जयमाला

–सोरठा –

भवजलनिधी जिहाज, पंचपरम गुरु जगत में।
तिनकी गुणमणिमाल, गाऊँ भक्ती वश सही।।1।।

(चाल-हे दीनबन्धु....)

जैवंत अरिहंत देव, सिद्ध अनंता।
जैवंत सूरि उपाध्याय साधु महंता।।
जैवंत तीन लोक में ये पंचगुरु हैं।
जैवंत तीन काल के भी पंचगुरु हैं।।1।।

अर्हंत देव के हैं छियालीस गुण कहे।
जिन नाम मात्र से ही पाप शेष ना रहे।।
दशजन्म के अतिशय हैं चमत्कार से भरे।
कैवल्यज्ञान होत ही अतिशय जु दश धरें।।2।।

चौदह कहे अतिशय हैं देव रचित बताये।
तीर्थंकरों के ये सभी चौंतीस हैं गाये।।
हैं आठ प्रातिहार्य जो वैभव विशेष हैं।
आनंत चतुष्टय सुचार सर्व श्रेष्ठ हैं।।3।।

जो जन्म मरण आदि दोष आठदश कहे।
अर्हंत में न हों अतः निर्दोष वे रहें।।
सर्वज्ञ वीतराग हित के शास्ता हैं जो।
है बार बार वंदना अरिहंत देव को।।4।।

सिद्धों के आठ गुण प्रधान रूप से गाये।
जो आठ कर्म के विनाश से हैं बताये।।
यों तो अनंत गुण समुद्र सर्व सिद्ध हैं।
उनको है वंदना जो सिद्धि में निमित्त हैं।।5।।

आचार्य देव के प्रमुख छत्तीस गुण कहे।
दीक्षादि दे चउसंघ के नायक गुरू रहें।।
पच्चीस गुणों से युक्त उपाध्याय गुरु हैं।
जो मात्र पठन पाठनादि में ही निरत हैं।।6।।

जो आत्मा की साधना में लीन रहे हैं।
वे मूलगुण अट्ठाइसों से साधु कहे हैं।।
आराधना सुचार की आराधना करें।
हम इन त्रिभेद साधु की उपासना करें।।7।।

अरिहंत सिद्ध दो सदा आराध्य गुरु कहे।
त्रयविधि मुनी आराधकों की कोटि में रहें।।
अर्हंत सिद्ध देव हैं शुद्धातमा कहे।
शुद्धात्म आराधक हैं सूरि स्वात्मा लहें।।8।।

गुरुदेव उपाध्याय प्रतिपादकों में हैं।
शुद्धातमा के साधकों को साधु कहे हैं।।
पाँचों ये परम पद में सदा तिष्ठ रहे हैं।
इस हेतु से परमेष्ठी ये नाम लहे हैं।।9।।

इन पाँच के हैं इक सौ तितालीस गुण कहे।
इन मूलगुणों से भी संख्यातीत गुण रहें।।
उत्तर गुणों से युक्त पाँच सुगुरु हमारे।
जिनका सुनाम मंत्र भवोदधि से उबारे।।10।।

हे नाथ! इसी हेतु से तुम पास में आया।
सम्यक्त्व निधी पाय के तुम कीर्ति को गाया।।
बस एक विनती पे मेरी ध्यान दीजिये।
कैवल्य 'ज्ञानमती' का ही दान दीजिए।।11।।

–दोहा–

त्रिभुवन के चूड़ामणि, अर्हंत सिद्ध महान।
सूरी पाठक साधु को, नमूँ नमूँ गुणखान।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। परिपुष्पांजलिः।

–दोहा–

पंचपरमगुरु की शरण, जो लेते भविजीव।
रत्नत्रय निधि पाय के, भोगें सौख्य सदीव।।13।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

卐

तीन लोक मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं त्रैलोक्यसंबंधिअर्हत्सिद्धा-चार्योपाध्याय-सर्वसाधुजिनधर्मजिनागम-जिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः।

सप्तपरमस्थान पूजा

–गीता छंद–

श्री वीतराग जिनेन्द्र को, प्रणमूँ सदा वर भाव से।
श्री सप्तपरमस्थान पूजूँ, प्राप्ति हेतू चाव से।।
आह्वान थापन सन्निधापन, भक्ति श्रद्धा से करूँ।
सज्जाति से निर्वाण तक, पद सप्त की अर्चा करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं सप्तपरमस्थानसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं सप्तपरमस्थानसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं सप्तपरमस्थानसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक –(चाल-नंदीश्वर श्रीजिनधाम)

जल शीतल निर्मल शुद्ध, केशर मिश्र करूँ।
अंतर्मल क्षालन हेतु, शुभ त्रय धार करूँ।।
मैं सप्तपरमपद हेतु, परमस्थान जजूँ।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री परब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित अलिचुंबित गंध, कुंकुम संग मिला।
भव दाह निकंदन हेतु, चर्चत सौख्य मिला।।
मैं सप्तपरमपद हेतु, परमस्थान जजूँ।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री परब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ताफल सम वर शुभ्र, तंदुल धोय धरूँ।
वर पुंज चढ़ाऊँ आन, उत्तम सौख्य वरूँ।।
मैं सप्तपरमपद हेतु, परमस्थान जजूँ।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री परब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदार वकुल मचकुंद, सुरभित पुष्प लिया।
मदनारि विनाशन हेतु, अर्चूं खोल हिया।।

मैं सप्तपरमपद हेतु, परमस्थान जजूँ।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री परब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुविध उत्तम पकवान, घृत से पूर्ण भरे।
निज क्षुधा निवारण हेतु, अर्चूं भक्ति भरे।।
मैं सप्तपरमपद हेतु, परमस्थान जजूँ।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री परब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक ज्योति प्रकाश, जगमग ज्योति करे।
दीपक से पूजा सत्य, ज्ञान उद्योत करे।।
मैं सप्तपरमपद हेतु, परमस्थान जजूँ।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री परब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुगंधित धूप, खेवत पाप जरें।
वर सप्त पदों को पूज, उत्तम सौख्य वरें।।
मैं सप्तपरमपद हेतु, परमस्थान जजूँ।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री परब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम सुपारी दाख, एला थाल भरे।
फल से पूजत शिव सौख्य, अनुपम प्राप्त करें।।
मैं सप्तपरमपद हेतु, परमस्थान जजूँ।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री परब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प, नेवज दीप लिया।
वर धूप फलों से युक्त, उत्तम अर्घ्य किया।।
मैं सप्तपरमपद हेतु, परमस्थान जजूँ।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री परब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

शांतीधारा देय, सप्तपरमपद को जजूँ।
परम शांति सुख हेतु, सब जग शांती हेतु मैं।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार, पुष्प सुगंधित लायके।
सप्तपरमपद हेतु, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–नरेन्द्र छंद–

मात-पिता कुल उभय पक्ष की, शुद्धी सज्जाती है।
सम्यग्दर्शन सहित भव्य को, निश्चित मिल जाती है।।
जल गंधादिक अष्टद्रव्य ले, हर्षित भाव जजूँ मैं।
सज्जाति स्थान परम को, पूजत सौख्य भजूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं सज्जातिपरमस्थानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वजनों से मान्य जगत में, सद्गृहस्थ पद माना।
धर्म-अर्थ अरु काम-मोक्ष का, आकर[1] श्रेष्ठ बखाना।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, हर्षित भाव जजूँ मैं।
सद्गार्हस्थ परम पद पूजत, उत्तम सौख्य भजूँ मैं।।2।।

ॐ ह्रीं सद्गृहस्थत्वपरमस्थानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमहाव्रत, पंचसमिति त्रय-गुप्ति सहित जो माना।
वरचारितमय परीव्राज्य पद, जग में सर्व प्रधाना।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, हर्षित भाव जजूँ मैं।
परिव्राज्य पद परम पूज कर, उत्तम सौख्य भजूँ मैं।।3।।

ॐ ह्रीं प्राव्राज्यपरमस्थानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोटि कोटि सुर सहित महर्द्धी, गुण सम्पन्न कहाता।
सुरपति पद सब देवगणों में, आज्ञा नित्य चलाता।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, हर्षित भाव जजूँ मैं।
वर सुरेन्द्र पद पूजन करके, उत्तम सौख्य भजूँ मैं।।4।।

ॐ ह्रीं सुरेन्द्रत्वपरमस्थानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. खजाना।

षट्खंडाधिप चक्रवर्ति पद, वैभव पूर्ण जगत में।
सम्यग्दर्शन शून्यजनों को, मिलना दुष्कर सच में।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, हर्षित भाव जजूँ मैं।
शुभ साम्राज्य परम पद पूजत, उत्तम सौख्य भजूँ मैं।।5।।

ॐ ह्रीं साम्राज्यपरमस्थानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्निकाय देवगण पूजित, महामहोत्सवकारी।
तीर्थंकर पद सर्वोत्तम पद, त्रिभुवन जन सुखकारी।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, हर्षित भाव जजूँ मैं।
तीर्थंकर स्थान परम पद, पूजत सौख्य भजूँ मैं।।6।।

ॐ ह्रीं आर्हंत्यपरमस्थानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाति अघाती कर्म घातकर, हुए निकल परमात्मा।
शुद्ध सिद्ध कृतकृत्य निरंजन, लोक शिखर गत आत्मा।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, हर्षित भाव जजूँ मैं।
परिनिर्वाण परमपद पूजत, निरुपम सौख्य भजूँ मैं।।7।।

ॐ ह्रीं निर्वाणपरमस्थानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

सज्जाती सद्गृहस्थ पद अरु, पारिव्राज्य सुरनाथा।
वर साम्राज्य परम अर्हत्पद, परिनिर्वाण विधाता।।
सप्त परमस्थान भुवन में, सर्वोत्तम कहलाते।
पूर्ण अर्घ्य ले इन्हें जजूँ मैं, निज पद पूरण वास्ते।।8।।

ॐ ह्रीं सप्तपरमस्थानाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य–**ॐ ह्रीं परब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय नमः।**

जयमाला

–दोहा–

गुणरत्नाकर वृषभजिन, भव्यकुमुद भास्वान।
सप्तपरमपद पाय के, भोगें सुख निर्वाण।।1।।

चाल-श्रीपति जिनवर.....

शुभजाति गोत्र वरवंश तिलक, जो सज्जाती के जन्मे हैं।
जो उभय पक्ष की शुद्धि सहित, औ उच्चगोत्र में जन्मे हैं।।

वे प्रथम परम पद सज्जाती, पाकर छहपद के अधिकारी।
वह सज्जाती स्थान सदा, भव भव में होवे गुणकारी।।2।।

धर्मार्थ काम त्रय वर्गों को, जो बाधा रहित सदा सेते।
पंचाणुव्रत औ सप्तशील, धारण कर सद्गृहस्थ होते।।
वे ही भव भोगों से विरक्त, जिनदीक्षा धर मुनि बनते हैं।
प्राव्राज्य तृतीय परम पद पा, निज आतम अनुभव करते हैं।।3।।

विधिवत् संन्यास मरण करके, देवेन्द्र परम पद पाते हैं।
स्वर्गों के अनुपम भोग-भोग, फिर चक्रीश्वर बन जाते हैं।।
सोलह कारण भावन भाकर, तीर्थंकर पद को पाते हैं।
छठवें आर्हन्त्य परम पद को, पाकर शिवमार्ग चलाते हैं।।4।।

सब कर्म अघाती भी विनाश, निर्वाण रमापति हो जाते।
जो काल अनन्तानन्तों तक, सुखसागर में गोते खाते।।
इन सप्त परमस्थानों को, क्रम से भविजन पा लेते हैं।
जो सप्तपरमपद व्रत करते, वे अंतिमपद वर लेते हैं।।5।।

–घत्ता–

जय सप्तपरमपद, त्रिभुवन सुखप्रद,
जय जिनवर पद नित्य नमूँ।
'सज्ज्ञानमतीवर', शिव लक्ष्मीकर,
जिनगुण सम्पत्ती परणूँ।।6।।

ॐ ह्रीं सप्तपरमस्थानाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जो सम्यक्विधि सप्तपरमस्थान सुव्रत करते हैं।
भक्ती से जिनराज चरण का, नित अर्चन करते हैं।।
वे क्रम से इन परम पदों को, पाकर सुख भजते हैं।
स्वर्ग सौख्य भज कर्म विलय कर, परम सिद्ध बनते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।।

णमोकार पैंतीस व्रत विधि

नमस्कार पैंतीसी व्रत में सप्तमी के सात उपवास, पंचमी के पाँच उपवास, चतुर्दशी के चौदह उपवास और नवमी के नौ उपवास बताये गये हैं। णमोकार मंत्र में पैंतीस अक्षर होते हैं, एक-एक अक्षर का एक-एक उपवास किया जाता है। इस व्रत के आरंभ करने में किसी मास की किसी विशेष तिथि का नियम नहीं है, केवल तिथि के अनुसार ही व्रत किया जाता है।

इस व्रत में उपवास के दिन अभिषेक करके पंचपरमेष्ठी णमोकार मंत्र पूजन करना चाहिए तथा-

मंत्र–**'ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं', ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं, ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं''** इस मंत्र का जाप करना चाहिए।

जिनगुणसंपत्ति व्रत विधि एवं कथा

धातकीखण्ड द्वीप के अन्तर्गत पूर्वमेरुसंबंधी पश्चिम विदेह क्षेत्र में गंधिल नामक देश है। उसमें एक पाटलिपुत्र नाम का नगर है। उस नगर में एक नागदत्त सेठ रहते थे, उनकी भार्या का नाम सुमति था। वे दंपत्ति धनहीन होने से अत्यंत दुःखी थे। दोनों ही जंगल से लकड़ी आदि लाकर उसे बेचकर अपना पेट पालन करते थे। एक दिन बेचारी सुमति भूख-प्यास से घबराकर एक वृक्ष की छाया में बैठी थी, इतने में बहुत से नर-नारियों को उत्साह के साथ जाते हुए देखकर पूछा–बंधु और बहनों! आप लोग आज कहाँ जा रहे हैं? तब किसी ने कहा–बहन! इस अंबरतिलक पर्वत पर पिहितास्रव नाम के महामुनि आये हुए हैं, उनके दर्शन पूजन के लिए हम लोग जा रहे हैं।

सुमति[1] भी उन लोगों के साथ गुरु के दर्शनार्थ वहाँ चली गई। मुनिराज से षट्कर्म और बाहर व्रतों का उपदेश सुनकर अवसर पाकर उसने प्रश्न किया–

1. आदिपुराण में वणिक् की पुत्री निर्नामिका ने यह व्रत पिहितास्रव मुनि से लेकर किया और पुनः क्रम से प्रभा देवी आदि पदों को प्राप्त करते हुए राजा श्रेयांस हो गया, ऐसा कथन है।

हे भगवन्! किस पाप के उदय से मैं महान् दरिद्र हुई हूँ? मुनिराज ने कहा–पुत्री! पलासकूट ग्राम में दिविलह राजा की सुमति रानी से तू धनश्री नाम की कन्या हुई थी। एक दिन सखियों के साथ वन में क्रीड़ा करते हुए वृक्ष के नीचे ध्यान में मग्न समाधिगुप्त मुनिराज को देखा, रूप- यौवन के गर्व से उन्मत्त होकर तूने उनके ऊपर कुत्ते के द्वारा उपसर्ग कर दिया किन्तु मुनिराज ने शांत भाव से उपसर्ग सहन कर लिया। मुनि-उपसर्ग के पाप के कारण आयु पूर्णकर मरकर तू सिंहनी हुई। वहाँ से आकर तू धनहीन घर में उत्पन्न हुई है।

पुनः सुमति बोली–हे भगवन्! कोई ऐसा व्रत बतलाइये कि जिससे इस पाप से छुटकारा मिले। मुनि ने कहा–पुत्री! तुम सम्यग्दर्शनपूर्वक जिनगुणसम्पत्ति व्रत करो, जिससे तुम्हारे मनवांछित कार्यों की सिद्धि होगी। इस व्रत की विधि इस प्रकार है–सोलहकारण भावनाओं के 16 उपवास, पंचकल्याणक के 5, अष्ट प्रातिहार्य के 8 और चौंतीस अतिशयों के 34, इस प्रकार कुल मिलाकर 63 उपवास या प्रोषध (एक भुक्ति) करो।

[1]व्रतविधि निर्णय में ''प्रतिपदा के 16, पंचमी के 5, अष्टमी के 8, दशमी के 20 और चौदस के 14 ऐसे तिथि से उपवास माने हैं।'' व्रत के दिन पंचामृत अभिषेक करके पूजन करें, पुनः जाप्य करें। व्रत की कथा पढ़ें, स्वाध्याय आदि करते हुए दिन भर धर्मध्यान में व्यतीत करें। व्रत के दिन जिनगुणसम्पत्ति मंत्रों में से जिस मंत्र का दिन हो, उस मंत्र का जाप्य करें।

व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करें। उद्यापन की शक्ति न होने से व्रत दूना करें। उद्यापन में मंदिर में मंडल माँडकर बड़े समारोह के साथ भगवान की सम्मानपूर्वक पूजा करें, पात्रदान देवें, आम, केले, नारंगी, श्रीफल, अखरोट, खारिक, बादाम इत्यादि त्रेसठ-त्रेसठ फल एवं अनेक प्रकार के नैवेद्य सहित भगवान की पूजा करें। मंदिर में चंदोवा, छत्र, चंवर, झालर, घंटा आदि उपकरण भेंट करें। ज्ञानावरणीय कर्मक्षयार्थ श्रावक-श्राविकाओं को 63 ग्रंथ बाँटें।

सुमति (निर्नामिका) ने गुरु से व्रत ग्रहण कर विधिवत् पालन किया, अंत में समाधिपूर्वक मरण करके स्वर्ग में ललितांग देव की स्वयंप्रभा नाम की महादेवी हुई। वहाँ से चयकर जंबूद्वीप के पूर्वविदेह संबंधी पुष्कलावती देश के अन्तर्गत पुंडरीकिणी नगरी में वज्रदंत चक्रवर्ती की लक्ष्मीमती नाम की महारानी से श्रीमती नाम की पुत्री हुई, जो कि वज्रजंघ महाराज को विवाही गई। किसी समय इन

1. व्रत तिथि निर्णय, पृ. 264।

दम्पत्ति ने मुनियुगल को आहारदान देकर महान् पुण्य संचय किया। वहाँ से मरकर उत्तम भोगभूमि में दोनों पति-पत्नी हुए। वहाँ पर चारण मुनियों के उपदेश से दोनों ने सम्यक्त्व ग्रहण कर लिया। वहाँ से मरकर ऐशान स्वर्ग में वज्रजंघ आर्य श्रीधर देव हो गये और श्रीमती आर्या स्वयंप्रभ देव हो गईं। सम्यक्त्व के प्रभाव से श्रीमती को स्त्रीपर्याय से छुटकारा मिल गया। स्वर्ग से च्युत होकर विदेह क्षेत्र में श्रीधर देव तो राजा सुविधि हुआ और उसकी मनोरमा रानी से यह स्वयंप्रभ देव का जीव केशव नाम का प्यारा पुत्र हुआ। पुनः दीक्षित होकर ये सुविधि सोलहवें स्वर्ग में इन्द्र हुए एवं केशव वहीं पर प्रतीन्द्र हुआ। पुनः यह इन्द्र स्वर्ग से आकर पूर्वविदेह में वज्रनाभि चक्रवर्ती हुआ और प्रतीन्द्र का जीव चक्रवर्ती व चौदह रत्नों में से गृहपति नाम का रत्न हुआ, जिसका नाम धनदेव था। अनन्तर वज्रनाभि चक्रीश ने दीक्षा लेकर सोलहकारण भावनाओं से तीर्थंकर प्रकृति को बाँध लिया और श्रेणी में मरणकर सर्वार्थसिद्धि में अहमिन्द्र हो गये। धनदेव भी दीक्षित होकर अंत में मरणकर ध्यान के प्रभाव से सर्वार्थसिद्धि में अहमिंद्र हो गये। वहाँ से चयकर वज्रनाभि का जीव अहमिंद्र तो भगवान ऋषभदेव हुआ है और धनदेव का जीव कुरुजांगल देश के हस्तिनापुर में राजा सोमप्रभ का भाई श्रेयांस कुमार हुआ है।

भगवान ऋषभदेव को जब एक वर्ष तक आहार का लाभ नहीं हुआ, तब हस्तिनापुर में आने पर उनके दर्शन से राजा श्रेयांस को श्रीमती के भव में दिये गये आहारदान का जातिस्मरण हो जाने से आहारदान की विधि का ज्ञान हो गया। उसी समय उन्होंने भगवान को इक्षुरस का आहार देकर अक्षय पुण्य सम्पादन किया, आज भी वह दिवस अक्षयतृतीया के नाम से जगत् में पूज्य हो रहा है।

राजा श्रेयांस भगवान के केवलज्ञान के अनन्तर उनके समवसरण में अपने भाई के साथ दीक्षित होकर भगवान के गणधर हो गये पुनः अन्त में कर्मों का नाश कर मुक्ति पद को प्राप्त हो गये। अहो! निर्नामिका ने एक जिनगुणसम्पत्ति व्रत का पालन किया, जिसके प्रसाद से उत्तम सुखों को भोगकर अन्त में राजा श्रेयांस होकर निर्वाणपद को प्राप्त कर वहाँ पर अनन्त-अनन्त काल के लिए पूर्ण सुखी हो चुके हैं।

जिनगुणसंपत्ति के मंत्र

प्रतिपदा की 16 जाप्य

1. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा दर्शनविशुद्धिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

2. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा विनयसंपन्नताभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

3. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

4. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

5. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा संवेगभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारण-स्वरूपायै नमः।

6. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा शक्तितस्त्यागभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

7. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा शक्तितस्तपोभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

8. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा साधुसमाधिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

9. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा वैयावृत्यकरणभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

10. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अर्हद्भक्तिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

11. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा आचार्यभक्तिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

12. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा बहुश्रुतभक्तिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

13. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा प्रवचनभक्तिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

14. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा आवश्यकापरिहाणिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

15. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा मार्गप्रभावनाभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

16. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा प्रवचनवत्सलत्वभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

पंचमी की 5 जाप्य

1. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा स्वर्गावतरणगर्भकल्याणकजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

2. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा जन्माभिषेककल्याणकजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

3. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा परिनिष्क्रमणकल्याणकजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

4. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा केवलज्ञानकल्याणकजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

5. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा निर्वाणकल्याणकजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

अष्टमी के 8 जाप्य

1. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अशोकवृक्षमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

2. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सुरपुष्पवृष्टिमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

3. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा दिव्यध्वनिमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

4. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा चतुष्षष्टिचामरमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

5. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सिंहासनमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

6. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा भामंडलमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

7. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा देवदुन्दुभिमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

8. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा छत्रत्रयमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

दशमी की 20 जाप्य

1. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा निःस्वेदत्वसहजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

2. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा निर्मलत्वसहजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

3. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा क्षीरगौररुधिरत्वसहजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

4. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा समचतुरस्रसंस्थानसहजातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

5. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा वज्रवृषभनाराचसंहननसहजातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

6. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सौरूप्यसहजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

7. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सौगंध्यसहजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायैनमः।

8. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सौलक्षण्यसहजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

9. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अप्रमितवीर्यसहजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

10. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा प्रियहितवादित्वसहजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

11. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा गव्यूतिशतचतुष्टयसुभिक्षत्वघातिक्षय-जातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

12. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा गगनगमनत्वघातिक्षयजातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

13. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अप्राणिवधत्वघातिक्षयजातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

14. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा भुक्त्यभावघातिक्षयजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

15. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा उपसर्गाभावघातिक्षयजातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

16. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा चतुर्मुखत्वघातिक्षयजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

17. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वविद्येश्वरघातिक्षयजातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

18. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अच्छायत्वघातिक्षयजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

19. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अपक्ष्मस्पंदत्वघातिक्षयजातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

20. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा समाननखकेशत्वघातिक्षयजातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

चतुर्दशी की 14 जाप्य

1. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वार्धमागधीयभाषादेवोपनीतातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

2. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वजनमैत्रीभावदेवोपनीतातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

3. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वर्तुफलादिशोभिततरुपरिणामदेवोपनीतातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

4. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा आदर्शतलप्रतिमारत्नमयीमहीदेवोपनीता-तिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

5. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा विहरणमनुगतवायुत्वदेवोपनीतातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

6. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वजनपरमानन्दत्वदेवोपनीतातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

7. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा वायुकुमारोपशमितधूलिकंटकादिदेवो-पनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

8. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा मेघकुमारकृतगन्धोदकवृष्टिदेवोपनीतातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

9. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा पादन्यासे कृतपद्मानिदेवोपनीतातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

10. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा फलभारनम्रशालिदेवोपनीतातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

11. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा शरत्कालवन्निर्मलगगनत्वदेवोपनीतातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

12. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा शरन्मेघवन्निर्मलदिग्भावत्वदेवो-पनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

13. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा एतैतेतिचतुर्निकायामरपरापराह्वानदेवो-पनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

14. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा धर्मचक्रचतुष्टयदेवोपनीतातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

अनादि निधन
णमोकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं,
णमो सिद्धाणं,
णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं,
णमो लोए सव्व साहूणं।

रोहिणी व्रत विधि एवं कथा

जम्बूद्वीप के इसी भरत क्षेत्र में कुरुजांगल देश है, इसमें हस्तिनापुर नाम का सुन्दर नगर है। किसी समय यहाँ वीतशोक राजा राज्य करते थे। इनकी रानी का नाम विद्युत्प्रभा था। इन दोनों के एक अशोक नाम का पुत्र था।

इसी समय अंग देश की चम्पा नगरी में मघवा नाम के राजा राज्य करते थे, इनकी श्रीमती नाम की रानी थी। श्रीमती के आठ पुत्र और रोहिणी नाम की एक कन्या थी। यौवन को प्राप्त हुई रोहिणी ने एक समय आष्टान्हिक पर्व में उपवास करके मंदिर में पूजा करके सभा भवन में बैठे हुए माता-पिता को शेषा दी। पिता ने पुत्री को युवती देखकर कुछ क्षण मंत्रशाला में मंत्रियों से मंत्रणा की, पुनः स्वयंवर की व्यवस्था की। स्वयंवर में रोहिणी ने हस्तिनापुर के राजकुमार के गले में वरमाला डाल दी।

कालांतर में वीतशोक महाराज ने दीक्षा ले ली और अशोक महाराज बहुत न्यायनीति से राज्य का संचालन कर रहे थे। रोहिणी महादेवी के आठ पुत्र और चार पुत्रियाँ थीं। किसी समय महाराज अशोक महादेवी रोहिणी के साथ महल की छत पर बैठे हुए विनोद गोष्ठी कर रहे थे। पास में वसंततिलका धाय बैठी हुई थी। जिसकी गोद में रोहिणी का छोटा बालक लोकपाल खेल रहा था। इसी समय रोहिणी ने देखा कि कुछ स्त्रियाँ गली में अपने बालों को बिखेरे हुए एक बालक को लिए छाती, सिर, स्तन और भुजाओं को कूटती-पीटती हुई चिल्ला-चिल्ला कर रो रही हैं। तब रोहिणी ने अपनी वसंततिलका धात्री से कुतूहलवश पूछा–हे मातः! नृत्यकला में विशारद लोग सिग्नटक, भानी, छत्र, रास और दुंबिली इन पाँच प्रकार के नाटकों का अभिनय करते हैं। भरत महाराज द्वारा प्रणीत इन पाँच प्रकार के नाटकों के सिवाय ये स्त्रियाँ सादिकुट्टनरूप इस कौन से नृत्य का अभिनय कर रही हैं? इस नाटक में सात स्वर, भाषा और मूर्च्छनाओं का भी पता नहीं चल रहा है। तुम इस नाटक का नाम तो मुझे बताओ।

रोहिणी के इस भोलेपन के प्रश्न को सुनकर धाय बोली–पुत्री! कुछ दुःखी स्त्रियाँ महान् शोक और दुःख मना रही हैं।

रोहिणी ने जब धात्री के मुख से 'शोक' और 'दुख' ये दो शब्द सुने, तब उसने पूछा–अम्ब! यह बताओ कि यह 'शोक' और 'दुख' क्या वस्तु है?

तब धात्री ने रुष्ट होकर जवाब दिया–सुन्दरि! क्या तुम्हें उन्माद हो गया है? पाण्डित्य और ऐश्वर्य क्या ऐसा ही होता है? क्या रूप से पैदा हुआ गर्व यही है? जो कि तुम 'शोक' और 'दुख' को नहीं जानती हो और रुदन को नाटक-नाटक बक रही हो? क्या तुमने इसी क्षण जन्म लिया है?

क्रोधपूर्ण बात सुनकर रोहिणी बोली–भद्रे! आप मेरे ऊपर क्रोध मत कीजिए। मैं गन्धर्वविद्या, गणितविद्या, चित्र, अक्षर, स्वर और चौंसठ विज्ञानों तथा बहत्तर कलाओं को ही जानती हूँ। मैंने आज तक इस प्रकार का कलागुण न देखा है और न मुझसे किसी ने कहा है। यह आज मेरे लिए अदृष्ट-और अश्रुतपूर्व है इसीलिए मैंने आपसे यह पूछा है, इसमें अहंकार और पांडित्य की कोई बात नहीं।

पुनः धात्री बोली–वत्से! न यह नाटक का प्रयोग है और न किसी संगीत भाषा का स्वर है किन्तु किसी इष्ट बंधु की मृत्यु से रोने वालों का जो दुःख है, वही शोक कहलाता है।

धात्री की बात सुनकर रोहिणी पुनः बोली–भद्रे! यह ठीक है, परन्तु मैं रोने का भी अर्थ नहीं जानती, सो उसे भी बताइये।

रोहिणी के इस प्रश्न के पूरा होते ही राजा अशोक बोला–प्रिये! शोक से जो रुदन किया जाता है, उसका अर्थ मैं बतलाता हूँ। इतना कहकर राजा ने लोकपाल कुमार को रोहिणी की गोद से लेकर देखते ही देखते राजभवन के शिखर के नीचे फेंक दिया।

लोकपाल कुमार अशोक वृक्ष की चोटी पर गिरा, उसी समय नगर देवताओं ने आकर दिव्य सिंहासन पर उस बालक को बिठाया और क्षीरसागर से भरे हुए एक सौ आठ कलशों से उसका अभिषेक किया और उसे आभरणों से भूषित कर दिया। अशोक महाराज और रोहिणी ने जैसे ही नीचे नजर डाली तो बहुत ही विस्मित हुए। उस समय सभी लोगों ने इसे रोहिणी के पूर्वकृत पुण्य का ही फल समझा।

हस्तिनापुर के बाहर अशोकवन में अतिभूतितिलक, महाभूतितिलक, विभूतितिलक और अंबरतिलक नामक चार जिनमंदिर क्रमशः चारों दिशाओं में थे। एक बार रूपकुंभ और स्वर्णकुंभ नाम के दो चारण मुनि विहार करते हुए हस्तिनापुर में आकर पूर्व दिशा के जिनमंदिर में ठहर गये। वनपाल द्वारा मुनि आगमन का समाचार ज्ञात होने पर परिजन और पुरजन सहित अशोक

महाराज मुनिराज की वंदना के लिए वहाँ पहुँचे। वंदना-भक्ति के अनंतर राजा ने प्रश्न किया कि हे भगवन्! मैंने और मेरी पत्नी रोहिणी ने पूर्वजन्म में कौन सा पुण्य विशेष किया है, सो कृपा कर बतलाइये।

मुनिराज ने कहा–हे राजन्! इसी जम्बूद्वीप के अन्तर्गत भरत क्षेत्र में सौराष्ट्र देश है। इसमें ऊर्जयंतगिरि के पश्चिम में एक गिरि नाम का नगर है। इस नगर के राजा का नाम भूपाल और रानी का नाम स्वरूपा था। राजा के एक गंगदत्त राजश्रेष्ठी था, जिसकी पत्नी का नाम सिंधुमती था, इसे अपने रूप का बहुत ही घमण्ड था। किसी समय राजा के साथ वनक्रीड़ा के लिए जाते हुए गंगदत्त ने नगर में आहारार्थ प्रवेश करते हुए मासोपवासी समाधिगुप्त मुनिराज को देखा अैर सिंधुमती से बोला–प्रिये! अपने घर की तरफ जाते हुए मुनिराज को आहार देकर तुम पीछे से आ जाना। सिंधुमती पति की आज्ञा से लौट आई किन्तु मुनिराज के प्रति तीव्र क्रोध भावना हो जाने से उसने कड़वी तूमड़ी का आहार मुनि को दे दिया। मुनिराज ने हमेशा के लिए प्रत्याख्यान ग्रहण कर सल्लेखनापूर्वक शरीर का त्याग कर स्वर्गपद को प्राप्त कर लिया।

जब राजा वन से वापस लौट रहे थे कि विमान में स्थित कर मुनि को ले जाते हुए देखकर मृत्यु का कारण पूछा। तब किसी व्यक्ति ने सारी घटना राजा को सुना दी। उस समय राजा ने सिंधुमती का मस्तक मुण्डवाकर उस पर पाँच बेल बंधवाये, गधे पर बिठाकर उसके अनर्थ की सूचना नगर में दिलाते हुए उसे बाहर निकाल दिया। उसके बाद उसे उदुम्बर कुष्ठ हो गया और भयंकर वेदना से सातवें दिन ही मरकर बाईस सागर पर्यन्त आयु धारण कर छठे नरक में उत्पन्न हुई। यह पापिनी क्रम से सातों ही नरकों में भ्रमण करते हुए कदाचित् तिर्यंचगति में आकर दो बार कुत्ती हुई, सूकरी, शृगाली, चुहिया, गोंच, हथिनी, गधी और गौणिका हुई। अनंतर इसी हस्तिनापुर के राजश्रेष्ठी धनमित्र की पत्नी धनमित्रा से पूतिगंधा पुत्री के रूप में जन्मी, दुर्गंधा के समान उसके शरीर से भयंकर दुर्गंधि आ रही थी जिससे कि उसके पास किसी का भी बैठना कठिन था।

उसी शहर के वसुमित्र सेठ का एक श्रीषेण पुत्र था, जो सप्त व्यसनी था। एक दिन चोरी कर्म से कोतवाल के द्वारा पकड़ा जाकर शहर से बाहर निकाला जा रहा था। उस समय धनमित्र ने कहा कि–श्रीषेण! यदि तुम मेरी

कन्या के साथ विवाह करना मंजूर करो तो मैं तुम्हें इस बंधन से मुक्त करा सकता हूँ। उसके मंजूर करने पर सेठ ने उसे बंधनमुक्त कराकर उसके साथ अपनी दुर्गन्धा कन्या का विवाह कर दिया। किन्तु विवाह के बाद जैसे-तैसे एक रात दुर्गन्धा के पास बिताकर मारे दुर्गन्ध के घबराकर वह श्रीषेण अन्यत्र भाग गया। बेचारी दुर्गन्धा पुनः पिता के घर पर ही रहते हुए अपनी निंदा करते हुए दिन व्यतीत कर रही थी। एक दिन उसने सुव्रता आर्यिका को अपने पितृगृह में आहार दिया। अनन्तर पिहितास्रव नामक चारणमुनि अमितास्रव मुनिराज के साथ वन में आये। वहाँ पर सभी श्रावकों ने गुरु वंदना करके उपदेश सुना। पूतिगन्धा ने भी गुरु का उपदेश सुनकर कुछ क्षण बाद प्रश्न किया–हे भगवन्! मैंने पूर्वजन्म में कौन सा पाप किया है जिससे मेरा शरीर महा दुर्गन्धियुक्त है।

मुनिराज ने कहा–पुत्री! सुनो, तुमने सिंधुमती सेठानी की अवस्था में मुनिराज को कड़वी तूमड़ी का आहार दिया था उसके फलस्वरूप बहुत काल तक नरक और तिर्यंचों के दुख भोगे हैं और अभी भी पाप के शेष रहने से यह स्थिति हुई है। सारी घटना सुनकर पूतिगंधा ने कहा–हे गुरुदेव! अब मुझे कोई ऐसा उपाय बतलाइये जिससे पापों का क्षय हो। मुनिराज ने कहा–पुत्री! अब तुम सभी पापों से मुक्त होने के लिए रोहिणी व्रत करो।

रोहिणी व्रत विधि–जिस दिन चन्द्रमा रोहिणी नक्षत्र में हो उस दिन चतुराहार त्यागकर उपवास करना चाहिए और वासुपूज्य जिनेन्द्र की पूजा करके उनका जाप करना चाहिए। **ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।** यह रोहिणी नक्षत्र सत्ताईस दिन में आता है। इस तरह सत्ताइसवें दिन उपवास करते हुए पाँच वर्ष और नव दिन में सरसठ उपवास हो जाते हैं। अनन्तर उद्यापन में वासुपूज्य भगवान की महापूजा कराके रोहिणी व्रत संबंधी पुस्तक लिखाकर (छपाकर) और भी अन्य ग्रंथों का भी भव्य जीवों में वितरण करना चाहिए। ध्वजा, कलश, घण्टा, घण्टिका, दर्पण, स्वस्तिक आदि से मंदिर को भूषित करके महापूजा के अनंतर चतुर्विध संघ को आहार आदि चार प्रकार का दान और आर्यिकाओं के लिए वस्त्र का दान देना चाहिए।

इस तरह गुरुमुख से सुनकर विधिवत् व्रत ग्रहणकर पूतिगंधा ने उसका पालन किया। श्रावक व्रत पालन करते हुए अंत में समाधिपूर्वक मरण करके वह अच्युत नामक सोलहवें स्वर्ग में महादेवी हो गई। वहाँ से च्युत होकर यह तुम्हारी वल्लभा रोहिणी हुई है। राजन्! यह रोहिणी व्रत का ही माहात्म्य है

जो कि यह 'शोक' और 'दुःख' को नहीं समझ पाई है।

अनन्तर मुनिराज ने अशोक से कहा – अब मैं तुम्हारे पूर्वजन्म सुनाता हूँ सो एकाग्रचित्त होकर सुनो।

कलिंग देश के निकट विंध्याचल पर्वत पर अशोक वन में स्तंबकारी और श्वेतकारी नाम के दो मदोन्मत्त हाथी थे। किसी एक दिन नदी में जल के लिए घुसे और आपस में लड़कर मर गये। वे बिलाव और चूहा हुए, पुनः साँप-नेवला और बाज-बगुला हुए, पुनः दोनों ही कबूतर हुए। अनन्तर कनकपुर के राजा सोमप्रभ के पुरोहित सोमभूमि की पत्नी सोमिला से सोमशर्मा और सोमदत्त नाम के पुत्र हो गये।

राजा सोमप्रभ ने सोमभूमि के मरने के बाद पुरोहित पद सोमदत्त नामक उनके छोटे पुत्र को दे दिया। किसी समय सोमदत्त को यह मालूम हुआ कि मेरा बड़ा भाई मेरी पत्नी के साथ दुराचार करता है, तब उसने विरक्त होकर जैनेश्वरी दीक्षा ले ली। इधर राजा ने पुरोहित पद सोमशर्मा को दे दिया।

एक बार सोमप्रभ राजा ने हाथी के लिए शकट देश के अधिपति वसुपाल के साथ युद्ध करने के लिए प्रस्थान कर दिया। उस समय सोमदत्त मुनि के दर्शन होने से सोमशर्मा ने कहा – महाराज! आपको अपशकुन हो गया है अतः इन मुनि को मारकर इनके खून को दशों दिशाओं में क्षेपण कर शांतिकर्म करना चाहिए। यह सुनकर राजा ने अपने कान दोनों हाथों से ढक लिए। तब विश्वसेन नामक निमित्तज्ञानी ने आकर बतलाया – राजन्! आपको आज बहुत ही उत्तम शकुन हुआ है। देखिए! ''यति, घोड़ा, हाथी, बैल, कुम्भ, ये चीजें प्रस्थान और प्रवेश में सिद्धिसूचक मानी गई हैं।''

अन्यत्र भी कहा है –

आरुरोह रथं पार्थ! गांडीवं चापि धारय!
निर्जितां मेदिनां मन्ये, निर्ग्रन्थो यतिरग्रतः।।

महाभारत में लिखा है कि श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं – हे अर्जुन! तुम रथ पर चढ़ जाओ और धनुष धारण कर लो। सामने निर्ग्रन्थ मुनिराज के दर्शन हो रहे हैं, इसलिए मैं समझता हूँ कि अब हमने पृथ्वी जीत ली। हमारी विजय निश्चित है। ज्योतिष शास्त्र में भी एक सुभाषित है –

पद्मिन्यो राजहंसाश्च, निर्ग्रन्थाश्च तपोधनाः।
यद्देशमभिगच्छन्ति, तद्देशे शुभमादिशेत्।

पद्मिनी स्त्रियाँ, राजहंस और निर्ग्रन्थ तपस्वी जिस प्रदेश में रहते हैं, उस प्रदेश में सर्वत्र मंगल रहता है। अन्यत्र धर्मग्रन्थों में भी 'साधु के दर्शन से पापों का नाश हो जाता है' ऐसा कहा गया है।

राजन्! आप देखिए, प्रातः ही राजा वसुपाल त्रिलोकसुन्दर हाथी लाकर आपको भेंट करेगा। विश्वसेन के वचनों से राजा का मन शान्त हो गया पुनः प्रातःकाल स्वयं वसुपाल राजा ने आकर वह हाथी सहर्ष भेंट कर दिया।

इधर सोमशर्मा ने पूर्व वैर के कारण रात्रि में सोमदत्त मुनि की हत्या कर दी। जब राजा को इस बात का पता चला तब उसने सोमशर्मा को पाँच प्रकार के दण्डों से दण्डित किया। मुनि हत्या के पास से सोमशर्मा को कुष्ठ रोग हो गया और वह मरकर सातवें नरक पहुँच गया।

वहाँ से निकलकर महामत्स्य हुआ, छठे नरक गया, सिंह हुआ, पाँचवे नरक गया, सर्प हुआ, चतुर्थ नरक गया, पक्षी हुआ, द्वितीय नरक गया, बगुला हुआ, पुनः प्रथम नरक गया। वहाँ से निकलकर सिंहपुर के राजा सिंहसेन की रानी से पूतिगंध नाम का महादुर्गन्ध शरीरधारी पुत्र हुआ।

किसी समय विमलमदन जिनराज को केवलज्ञान होने पर देवों के आगमन को देखकर पूतिगंध मूर्च्छित हो गया पुनः होश में आने पर उसे जातिस्मरण हो गया। वह पिता के साथ केवली भगवान का दर्शन करके मनुष्यों की सभा में बैठ गया। राजा ने पूतिगंध के पूर्व भव पूछे और पूर्वोक्त प्रकार विशेष स्पष्टतया जिनेन्द्र की वाणी से अपने भवांतरों को सुनकर पूतिगंध ने कहा – प्रभो! अब मुझे दुःखों से छूटने के लिए कोई व्रतादि बतलाइये, तब भगवान ने उसे रोहिणी व्रत का उपदेश दिया। इस व्रत में तीन[1] साल में चालीस उपवास होते हैं और पाँच वर्ष नव दिन में सरसठ उपवास होते हैं। अनंतर विधिवत् उद्यापन करना चाहिए।

पूतिगंध राजकुमार इस व्रत और अणुव्रत आदि के प्रभाव से उसी भव में सुगंध शरीर वाला हो गया। अनंतर एक महीने में ही सल्लेखना विधि से मरण करके प्राणत नामक स्वर्ग में महर्द्धिक देव हो गया। वहाँ से च्युत होकर पूर्वविदेह में पुंडरीकिणी नगरी के विमलकीर्ति राजा की श्रीमती रानी से अर्ककीर्ति नाम का पुत्र हो गया। आगे जाकर अर्ककीर्ति ने महावैभवस्वरूप

1. व्रत तिथि निर्णय में 3 वर्ष, 5 वर्ष या 7 वर्ष भी इस व्रत के करने का विधान है।

चक्रवर्ती के पद को प्राप्त किया, अमित सुखों का अनुभव करके विरक्त हो जैनेश्वरी दीक्षा ले ली। अंत में मरणकर सोलहवें स्वर्ग में देवपद को प्राप्त किया। उस समय पूतिगंधा का जीव जो कि रोहिणी व्रत के प्रभाव से स्वर्ग में देवी हुई थी, वह इस देव की प्रिय देवी हुई। वहाँ से च्युत होकर आप अशोक राजा हुए हैं।

इस प्रकार मुनिराज के मुख से भवांतरों को सुनकर राजा-रानी अति प्रसन्न हुए और सभी पुत्र-पुत्रियों के भव पूछकर हर्षितमना अपने शहर वापस आ गये। एक समय श्वेत केश को देखकर विरक्त होकर राजा अशोक ने वासुपूज्य भगवान के समवसरण में जैनेश्वरी दीक्षा ले ली और सात ऋद्धि से सम्पन्न हुए भगवान के गणधर हो गये, अनन्तर मोक्ष को पधार गये। रोहिणी भी सुमति आर्यिका के समीप आर्यिका दीक्षा लेकर स्त्रीपर्याय को छेदकर सोलहवें स्वर्ग में देव हो गई।

इस प्रकार से रोहिणी व्रत का माहात्म्य अचिंत्य है। इस व्रत में हर उपवास के दिन भगवान वासुपूज्य का अभिषेक करके पूजन करना चाहिए, पुनः यह जाप्य करना चाहिए – **ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।**

तीर्थंकरत्रय मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थंकर-चक्रवर्ति-कामदेवपद-समन्वित-श्री शांतिनाथकुंथुनाथअरनाथ-तीर्थंकरेभ्यो नमः।

वृहत्पल्य व्रत की तिथियाँ

तिथि	व्रत का नाम	फल
आश्विन सुदी 6	सूर्यप्रभा	एक पल्य उपवास
आश्विन सुदी 13	चन्द्रप्रभा	दो पल्य उपवास
कार्तिक कृष्णा 5	कुमारसंभव	चार पल्य उपवास
कार्तिक कृष्णा 11	षडशीति	आठ पल्य उपवास
कार्तिक कृष्णा 14	पुष्पोत्तर	एक हजार पल्य उपवास
कार्तिक सुदी 12	नंदीश्वर	दो हजार पल्य उपवास
मगसिर कृष्णा 12	प्रातिहार्य	चार हजार पल्य उपवास
मगसिर सुदी 11	जितेन्द्रिय	पाँच पल्य उपवास
पौष कृष्णा 3	पंक्तिमान	छह पल्य उपवास
पौष कृष्णा 12	सूर्य	सात पल्य उपवास
पौष सुदी 5	पराक्रम	नौ पल्य उपवास
पौष सुदी 11	जयपृथु	दस पल्य उपवास
माघ कृष्णा 2	अजित	आठ पल्य उपवास
माघ कृष्णा 5	स्वयंप्रभ	ग्यारह पल्य उपवास
माघ कृष्णा 15	रत्नप्रभ	बारह पल्य उपवास
माघ सुदी 4	चतुर्मुख	तेरह पल्य उपवास
माघ सुदी 7	शील	चौदह पल्य उपवास
माघ सुदी 11	पंचाशीति	पन्द्रह पल्य उपवास

फाल्गुन वदी 3, 8, 14 को उपवास करने से क्रमशः सोलह, सतरह, अठारह पल्य उपवास का फल होता है। ऐसे ही फाल्गुन सुदी 5, 11 को उपवास करना चाहिए। चैत्र कृष्णा 3, 8, 11, चैत्र सुदी 1, 5, 8, 11, वैशाख वदी 3, 8, 14, वैशाख सुदी 1, 5, 8, 11, ज्येष्ठ वदी 3, 8, 14, ज्येष्ठ सुदी 5, 8, 10, आषाढ़ वदी 8, 14, आषाढ़ सुदी 1, 5, 8, 14, श्रावण वदी 1, 5, 8, 14, श्रावण-सुदी 3, 5, 8, 14, भाद्रपद वदी 5, 8, 14, भाद्रपद सुदी 5, 11, 14, आश्विन वदी 5, 2, 14 इन उपर्युक्त तिथियों में उपवास करना। इस व्रत में छियासठ उपवास होते हैं। यह व्रत एक वर्ष में समाप्त होता है, बहुत ही उत्कृष्ट है। व्रत पूर्ण होने के बाद शक्ति के अनुसार उद्यापन करके पूर्ण करना चाहिए।

व्रत के दिन पंचपरमेष्ठी की निम्नलिखित जाप्य करना चाहिए–

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नमः।

तथा जिनेन्द्र भगवान का अभिषेक करके नित्यपूजन और पंचपरमेष्ठी की पूजन करना चाहिए।

वृहत्पल्य व्रत का माहात्म्य

जिस[1] किसी ने मनुष्य जन्म प्राप्त करके यदि पल्य विधान नाम का व्रत किया है, वह भव्य है, यह बात निश्चित है। यह व्रत श्रवण मात्र से ही असंख्यात भवों के पापों का नाश कर देता है और तत्काल ही स्वर्गमोक्ष को भी देने वाला है। वृषभदेव भगवान ने पहले इस पल्य विधान का कथन किया है। उसी प्रकार वीर जिनेन्द्र के निकट में गौतम आदि महर्षियों ने भी इसे कहा है। इस विधान के पढ़ने से सहस्रगुणा फल होता है और इसका अनुष्ठान करने से उत्तम अनन्त केवलज्ञान प्राप्त होता है। इस व्रत के अनुषंगिक फल चक्रीपद और इन्द्रपद भी प्राप्त होते हैं किन्तु मुख्यरूप से इसका फल निर्मल तीर्थंकर पद प्राप्त करना ही है।'

सरस्वती मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिनि भगवति सरस्वति ह्रीं नमः।

1.वृहत्पल्यव्रतपूजन से उद्धृत।

सप्तपरमस्थान व्रत विधि

सज्जातिः सद्गार्हस्थ्यं, पारिव्राज्यं सुरेन्द्रता।
साम्राज्यं परमार्हन्त्यं, परिनिर्वाणमित्यपि।।

सज्जाति, सद्गार्हस्थ्य, पारिव्राज्य, सुरेन्द्रता, साम्राज्य, आर्हन्त्य और निर्वाण ये सात परम–सर्वोत्तम स्थान माने गये हैं। माता-पिता के वंश परम्परा की शुद्धि **सज्जाति** है। श्रावकाचार क्रियायुक्त श्रावक **सद्गृहस्थ** है। रत्नत्रय की पूर्ति हेतु जैनेश्वरी दीक्षा लेना **पारिव्राज्य** स्थान है। पंडितमरण से समाधिपूर्वक मरण कर देवेन्द्र होना **सुरेन्द्रत्व** परम स्थान है। वहाँ से च्युत होकर चक्रवर्ती के वैभव को प्राप्त करना **साम्राज्य** स्थान है। तीर्थंकर पद को प्राप्त करना **आर्हन्त्य** स्थान है। अनंतर संपूर्ण कर्मों से छूटकर सिद्धपद प्राप्त कर लेना **निर्वाण** परम स्थान है।

यह व्रत श्रावण सुदी प्रतिपदा से श्रावण सुदी सप्तमी तक किया जाता है। व्रत के दिन अभिषेक, जाप्य, कथा श्रवण, दान आदि कार्यों को करना चाहिए। सातों दिन एक ही वस्तु का सेवन किया जाता है। विधिवत् व्रत करने के उपरांत उद्यापन किया जाता है।

इस व्रत का फल उत्तम जाति, ऐश्वर्य, गार्हस्थ्य, उत्तम तप, इन्द्र पद, चक्रवर्ती पद, अर्हंत पद की प्राप्ति होती है। संसार में निर्वाण ही श्रेष्ठ पद है। इस व्रत से यह सातवाँ परमपद भी प्राप्त हो जाता है। यह व्रत लौकिक अभ्युदय के साथ-साथ निर्वाण पद को भी देने वाला है।

प्रतिपदा से लेकर सप्तमी तक निम्नलिखित जाप्य क्रम से करना चाहिए।

1. **ॐ ह्रीं अर्हं सज्जातिपरमस्थानप्राप्तये श्री ऋषभजिनेन्द्राय नमः।**
2. **ॐ ह्रीं अर्हं सद्गृहस्थपरमस्थानप्राप्तये श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमः।**
3. **ॐ ह्रीं अर्हं पारिव्राज्यपरमस्थानप्राप्तये श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय नमः।**
4. **ॐ ह्रीं अर्हं सुरेन्द्रपरमस्थानप्राप्तये श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।**
5. **ॐ ह्रीं अर्हं साम्राज्यपरमस्थानप्राप्तये श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय नमः।**
6. **ॐ ह्रीं अर्हं आर्हन्त्यपरमस्थानप्राप्तये श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय नमः।**
7. **ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाणपरमस्थानप्राप्तये श्री महावीरजिनेन्द्राय नमः।**

व्रत के लिए उत्तम तो उपवास ही है, यदि शक्ति न हो तो एक वस्तु का भोजन करना चाहिए। जिनेन्द्र भगवान का अभिषेक-पूजन करके सप्तपरमस्थान

पूजन करना चाहिए। रात्रि में जागरण आदि करते हुए धर्मध्यान में सारा समय व्यतीत करना चाहिए।

कथा– जम्बूद्वीप के अन्तर्गत इसी भरतक्षेत्र में कांभोज नाम का एक देश है। उसमें भूमितिलक नगर है। वहाँ पर देवपाल राजा राज्य करते थे, उनकी रानी का नाम लक्ष्मीमती था। यहाँ के राजश्रेष्ठी धनदत्त थे और उनकी सेठानी का नाम धनश्री था। एक समय जिनमंदिर में पूजन करके सेठ दम्पत्ति ज्ञानसागर मुनि के पास पहुँचे, उन्हें नमोस्तु-वंदना आदि करके धर्मोपदेश सुना। पुनः बोले– हे भगवन्! मुझे संसार समुद्र से पार होने के लिए कोई एक व्रत दीजिए। मुनिराज ने सप्तपरमस्थान व्रत की विधि समझाकर व्रत दिया। पुनः वे बोले– हे गुरुदेव! पूर्व में यह किसने किया है? मुनिराज ने इस पर एक कथा सुनाई।

इसी भरतक्षेत्र के अन्तर्गत नेपाल देश में ललितपुर नामक एक नगर है। वहाँ पर भूपाल नामक राजा की रानी का नाम विशाला था। संतान न होने से ये हमेशा खिन्न रहा करते थे। एक समय देशभूषण महामुनि के दर्शन करके धर्मोपदेश सुना। पुनः प्रश्न किया– हे भगवन्! हमारे पुत्र संतान होगी या नहीं? महामुनि ने कहा– तुम्हारे महापुण्यशाली एक पुत्र होने वाला है। राजा ने कहा– भगवन्! उसने पूर्व में क्या पुण्य किये हैं? मुनिनाथ ने कहा– सुनो.....

हस्तिनापुर नगर में रुद्रदत्त नाम का एक धर्मात्मा सेठ रहता था। उसकी भार्या का नाम रुद्रदत्ता था। इनके सोलह पुत्र थे। सेठ ने पुत्रों का विवाह करके प्रत्येक को 18-18 करोड़ द्रव्य दिया और अपनी पत्नी को दान-पूजन आदि के लिए 8 करोड़ द्रव्य दे दिया। आप स्वयं 32 करोड़ द्रव्य से जिनमंदिर, जिनप्रतिमाएं बनवाकर प्रतिष्ठा करवाईं, तीर्थयात्रा, ग्रंथलेखन, नित्य पूजन और जीर्णोद्धार आदि में सब द्रव्य खर्च करके आप जैनेश्वरी दीक्षा लेकर अंत में मरणकर सर्वार्थसिद्धि में अहमिन्द्र हो गये।

इधर इनके सोलह पुत्रों में से सातवाँ पुत्र नागसेन था। उसने अपने धन को सप्तव्यसनों में लगाकर दरिद्रावस्था प्राप्त कर ली। पुनः मर्कट वैराग्य से दीक्षित हो गया। फिर भी संयम से भ्रष्ट होकर संघ विरोधी, कलहप्रिय, स्वेच्छाचारी हो गया। आर्त-रौद्रध्यान से मरकर चौथे नरक में चला गया, वहाँ से आकर कुत्ता हुआ, जिसके सारे शरीर में कीड़े पड़ गये और बहुत ही दुर्गन्धि आती थी। कदाचित् पाप के कुछ मन्द होने से हस्तिनापुर में व्यास नाम के मिथ्यातापसी की विमलगंगा पत्नी से जन्म लेकर मनोहर नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसी शहर

के कुबेरकान्त सेठ और कनकमाला सेठानी के धनदेव नाम का एक पुत्र था। इन दोनों में मित्रता हो गई। दोनों एक गुरु के पास जैन शास्त्रों का अभ्यास करने लगे।

एक दिन नगर के नन्दनवन में ज्ञानसागर नामक दिगम्बर मुनि आये हुए थे। इनके पास पहुँचकर दोनों यथोचित वंदना भक्ति करके वहाँ उपदेश सुनने लगे। मुनिराज सप्तपरमस्थान का महत्व और उसके व्रत की विधि समझा रहे थे। उस समय वहाँ पर बहुतों ने यह व्रत ग्रहण किया। तापसी पुत्र मनोहर ने भी यह व्रत ले लिया और उसका विधिवत् पालन किया। इस व्रत के फल से वही जीव तुम्हारी भार्या के गर्भ में आने वाला है।

कुछ दिन बाद विशालारानी ने पुत्र रत्न को जन्म दिया, उसका 'श्रीपाल' नामकरण हुआ। श्रीपाल ने अपने जीवन में पुनरपि इसी व्रत का पालन किया। आगे व्रत के माहात्म्य से सप्तपरमस्थान के ऐश्वर्य को प्राप्त करते हुए अन्त में निर्वाण पद को प्राप्त कर लिया।

चत्तारि मंगल पाठ

चत्तारि मंगलं– अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा– अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि– अरिहंतसरणं पव्वज्जामि, सिद्धसरणं पव्वज्जामि, साहूसरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि।

सम्मेदशिखर टोंक वन्दना

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तीर्थराज सम्मेदशिखर है, शाश्वत सिद्धक्षेत्र जग में।
एक बार जो करे वन्दना, वह भी पुण्यवान सच में।।
ऊँचा पर्वत पार्श्वनाथ हिल, नाम से जाना जाता है।
जिनशासन का सबसे पावन, तीरथ माना जाता है।।1।।

जब प्रत्यक्ष करें यात्रा, उस पुण्य का वर्णन क्या करना।
लेकिन प्रतिदिन भी परोक्ष में, गिरि का ध्यान किया करना।।
आँख बन्दकर करो कल्पना, मेरी यात्रा शुरू हुई।
प्रातःकाल चले सब यात्री, जय जयकारा शुरू हुई।।2।।

एक हाथ में छड़ी दूसरे, में चावल की झोली है।
ज्यादातर सब पैदल हैं, पर किसी-किसी की डोली है।।
कभी न चलने वाले भी, हिम्मत कर पर्वत चढ़ते हैं।
पारस प्रभु के पास पहुँचने, हेतु कदम बढ़ चलते हैं।।3।।

चढ़ते-चढ़ते आठ किलोमीटर, का पथ जब तय होता।
दायें हाथ तरफ तब इक, चौपड़ा कुंड दर्शन होता।।
वहाँ दिगम्बर जिनमंदिर, संस्कृति की अमिट धरोहर है।
पार्श्वनाथ चन्द्रप्रभु बाहुबलि की मूर्ति मनोहर हैं।।4।।

उस मन्दिर में रुककर अपने, प्रभु का दर्शन कर लेना।
सुन्दर बनी धर्मशाला में, इच्छा हो तो ठहर लेना।।
मंदिर दर्शन करके फिर, यात्रा प्रारंभ करो अपनी।
बायें हाथ चलो चढ़ कर जहाँ, गौतम स्वामी टोंक बनी।।5।।

यहाँ पहुँचकर ठंडी-ठंडी, हवा थकान मिटाती है।
गणधर चरण वन्दना से, यात्रा की शक्ती आती है।।
प्रथम टोंक यह हुई पास में, दुतिय टोंक कुंथु जिन की।
तीर्थंकर क्रम में यह पहली, टोंक नमूँ कुंथु प्रभु की।।6।।

इन टोंकों के दर्शन से, उपवास का फल प्रारंभ हुआ।
त्रय प्रदक्षिणा देने से, आगे शुभ गति का बंध हुआ।।
शुभ भावों से आगे बढ़कर, टोंक तीसरी आती है।
श्रीनमिनाथ जिनेश्वर की, वन्दना सहज हो जाती है।।7।।

चौथा नाटक कूट तीर्थंकर, अरहनाथ का आया है।
जहाँ करोड़ों मुनियों ने भी, तपकर शिवपद पाया है।।
वन्दन कर आगे बढ़ने से, मल्लिनाथ के चरण मिले।
आगे छठे टोंक पर श्री, श्रेयाँसनाथ पदकमल मिले।।8।।

इन सबका वन्दन कर मैंने, सिद्धशिला को नमन किया।
वहाँ विराजे सिद्धों को, अपने मन में स्मरण किया।।
थकना नहिं अब पुष्पदंत की, सप्तम टोंक पे चलना है।
आगे चढ़ने हेतु वहीं से, आतमशक्ती भरना है।।9।।

पुष्पदंत प्रभु के चरणों में, अर्घ्य चढ़ाकर नमन किया।
और चले आठवीं टोंक पर, पदमप्रभू का शरण लिया।।
नवमीं टोंक विराजे श्री, मुनिसुव्रत जिन के चरणकमल।
इन सबके पावन पद में, श्रद्धा से मैंने किया नमन।।10।।

हे भव्यात्मन् ! अब दसवीं चन्द्रप्रभ टोंक पे चलना है।
पहले दौड़-दौड़ कर उतरो, फिर ऊँचाई चढ़ना है।।
चन्द्रप्रभ मंदिर में जाकर, चरणवन्दना करना है।
अपने सारे सुख-दुख को, प्रभु चरण बैठकर कहना है।।11।।

अब ग्यारहवीं टोंक पे चलकर, ऋषभदेव को नमन करो।
गिरि कैलाश से मुक्त हुए, यहाँ उनके चरण चिन्ह प्रणमो।।
श्री शीतल जिनवर की है, बारहवीं टोंक प्रसिद्ध कही।
मन-वच-तन से वन्दन कर, पाओ यात्रा का पुण्य सही।।12।।

श्री अनंत तीर्थंकर का, तेरहवाँ कूट स्वयंभू है।
उनके चरणों में श्रद्धायुत, शीश झुकाकर वन्दूँ मैं।।
संभव जिनवर का चौदहवाँ, धवलकूट माना जाता।
वासुपूज्य जिनका पन्द्रहवां, टोंक सभी को सुखदाता।।13।।

इनको वन्दन कर आगे, अभिनन्दन प्रभु के पास चलो।
बन्दर चिन्ह सहित उन प्रभु की, टोंक पे बन्दर से न डरो।।
अभिनन्दन के चरणों में, कर नमन चलो जलमंदिर तक।
चढ़ो वहाँ से जहाँ है गौतम, गणधर प्रभु की टोंक प्रथम।।14।।

फिर सत्रहवीं टोंक से अपनी, अगली यात्रा करना है।
धर्मनाथ प्रभु के चरणों में, नमन सभी को करना है।।
सुमतिनाथ का अट्ठारहवाँ, टोंक है अविचल कूट कहा।
नौ करोड़ बत्तीसलाख, उपवास का फल मिलता है यहाँ।।15।।

उन्निसवाँ है टोंक शांतिजिन, का जो यहाँ से मोक्ष गये।
नौ करोड़ से अधिक मुनी, इस कुंदकूट से मोक्ष गये।।
शांतिनाथ के संग सब मुनियों, को श्रद्धा से नमन किया।
पुनः बीसवीं टोंक पे जाकर, वीरप्रभू की शरण लिया।।16।।

श्री सुपार्श्व तीर्थंकर इक्कीसवीं टोंक पर राजे हैं।
कहते हैं यहाँ की मिट्टी से, रोग सभी नश जाते हैं।।
इनका वंदन करके पास में, विमल नाथ की टोंक चलो।
बाइसवीं इस टोंक को नमकर, अजितनाथ के निकट चलो।।17।।

थके कदम से तेइसवीं इस, टोंक का वंदन कठिन तो है।
लेकिन यात्रा पूरी करने, का शुभ भाव हृदय में है।।
धीरे-धीरे चढ़कर आखिर, अजितनाथ तक पहुँच गये।
उन चरणों में नमन किया फिर, नेमिनाथ जी प्राप्त हुए।।18।।

इस चौबिसवीं टोंक पे नेमीनाथ चरण को नमन किया।
पारसनाथ प्रभू पाने हेतू फिर मैंने गमन किया।।
स्वर्णभद्र यह टोंक है अंतिम, यात्रा पूर्ण यहाँ होती।
पार्श्वनाथ की पूजन करके, मन सन्तुष्टि यहाँ होती।।19।।

कुछ क्षण ध्यान करो फिर नीचे, गुफा में स्थित चरण नमो।
खुशी-खुशी वन्दना पूर्ण कर, पर्वत से नीचे उतरो।।
यही वन्दना आत्मा की, भव्यत्व शक्ति बतलाती है।
तभी ''चन्दनामती'' सभी में, भक्ति स्वयं आ जाती है।।20।।

भगवन् ! इस सम्मेदशिखर का, पुनः पुनः दर्शन पाऊँ।
यही भावना है मन में, सिद्धों के गुण में रम जाऊँ।।
इसी क्षेत्र से कभी मुझे, निर्वाण धाम भी मिल जावे।
सिद्ध भक्ति मेरे जीवन में, सिद्ध अवस्था दिलवाये।।21।।

पंचपरमेष्ठी की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज - चांदनपुर के गाँव में बुला ले सांवरिया.....

घृत दीपक का थाल ले, उतारूँ आरतिया, मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।
पाँचों परमेष्ठी की एवं चौबीसों जिनवर की।।घृत दीपक.।।टेक.।।

समवसरणयुत अरिहंतों की, सिद्धशिला के सिद्धों की-2
भवदुख नाशन हेतु ही, उतारूँ आरतिया, मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।।1।।

परमेष्ठी आचार्य उपाध्याय, साधु मोक्षपथगामी है-2
रत्नत्रय की प्राप्ति हित, उतारूँ आरतिया, मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।।2।।

मुनिवर ही तो कर्म नाश, अरिहंत-सिद्ध पद पाते हैं-2
कर्म विनाशन हेतु ही, उतारूँ आरतिया, मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।।3।।

चौबीस जिन जहाँ जन्मे एवं, जहाँ से मोक्ष पधारे हैं-2
उन सब पावन तीर्थ की, उतारूँ आरतिया, मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।।4।।

देव-शास्त्र-गुरू तीनों जग में, तीन रतन माने हैं-2
आतम निधि के हेतु ही, उतारूँ आरतिया, मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।।5।।

तीन लोक के जिनमन्दिर, कृत्रिम-अकृत्रिम जितने हैं-2
उन सबकी ''चंदनामती'', उतारूँ आरतिया, मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।।6।।

पाँचों परमेष्ठी की एवं चौबीसों जिनवर की-2
घृत दीपक का थाल ले, उतारूँ आरतिया, मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।।7।।